मेरीखेती

अप्रैल, 2024 मुल्य: रु49

www.merikheti.com

विषय सूची

सम्पादकीय

सलाहकार मंडल

खेत खलियान	01 - 07
सब्जी	08 - 14
फल	15 - 18
फूल	19
मशीनरी	20 - 23
मौसमी व अन्य कृषि सुझाव	24 - 28
औषधीय खेती	29 - 31
किसान समाचार	32 - 35
पशुपालन–पशुचारा	36 - 38
प्रगतिशील किसान	39
सम्पादकीय	40

विज्ञापन के लिए संपर्क करें : 91-9899991906, 91-8800777501

सम्पादकीय

धनवान बनने की जुगत में किसान

खेती किसानी से लाख जतन के बाद भी किसान धनवान नहीं बन पा रहे हैं, लगातार जरूरतें बढती जा रही हैं और खेती सिकुडती जा रही है, कभी जो जमीन एक बाप के चार बेटों की जीविका या उनके भरण पोषण का जरिया हुआ करती थी अब उसी जमीन पर एक दर्जन लोगों के पालन पोषण का भार आ गया है, कोरोना काल में यह भार और तेजी से बढा है, खेती में उत्पादन में वृद्धि हुई है तो लागत भी लगातार बढ रही है, ऐसे में किसानों को जिन फसलों में अच्छी आय नजर आ रही है उन्हें अपना रहे हैं, खाद्य तेल देने वाली फसलें मौसम की मार को नहीं झेल पातीं, यही कारण है कि तेल या तिलहरी फसलों का हमें देश की जरूरतों को पूरा करने के लिए आयात करना पडता है।

पश्चिमी उत्तर प्रदेश में गर्मी वाले धान की नर्सरी तैयार हो चुकी है, चंद रोज में उसकी रोपाई शुरू होने वाली है, पानी को ओक लगाकर पीने वाली धान की फसल उन सूखे इलाकों में भी लगाई जा रही है जहां भूमिगत जल खारा है, ऐसे इलाकों में धान की खेती जमीन की उपजाऊ क्षमता को बिगाड रही है, धान गेहूं फसल चक्र वाले इलाकों में जमीन में लवणीयता एवं क्षार बढने से मिट्टी की सेहत खराब हो रही है, जब जमीन ही ऊसर हो जाएगी तो धनवान तो दूर खेती से दो समय की रोटी के लिए अन्न उपजाने के भी लाले पड जाएंगे, सरकारी नीतियों ने खेती को बिगाड दिया है, खेती के चक्र को गडबडा दिया है, ऐसे में किसान करे तो क्या करे, सरकार एमएसपी घोषित तो करती है लेकिन उस रेट पर फसलों की खरीद की गारंटी नहीं दे पाती, जब प्राईवेट कंपनिया हर चीज को पूरे देश में खरीद सकती हैं तो फिर सरकार क्यों नहीं, आईटीसी जैसी कंपनियां इसका जीता जागता उदाहरण हैं जो दशकों से सीधे किसानों से माल खरीदती हैं और प्रसंस्करण कर विभिन्नं उत्पाादों को बाजार में बेचकर मुनाफा कमा रही है।

किसान की मेहनत से अनेक उद्योग चल रहे हैं, अनेक लोगों को वहां खेती के बाहर काम मिल रहा है, किसानों कल्यासण की दुहाई देकर सरकारें बन बिगडती रही हैं, सरकारों के बनने बिगडने की तरह ही खेती किसानी की सेहत भी बिगड रही है, यही कारण है कि किसान अपने बच्चों को खेती नहीं कराना चाहते, अब किसान के बेटों ने भी खेती को छोडकर दूसरे कामों से आजीविका कमाना शुरू कर दिया है, धनवान बनने की जुगत में किसान न किसान रहा न ही अन्य कारोबारों में महारथी बन पाए हैं, किसान जमीनों की कीमतें बढने से जमीनें भी बेचने लगे हैं, इसके बाद भी जमीनों की मोटी कीमत पाकर भी आजीविका चलाने का काम भी नहीं चला पा रहे हैं, किसान की मालीहालत को सुधारने को जब तक ठोस सरकारी नीति नहीं बनेगी तब तक साल में दो से तीन बार धान लगाने से भी किसानों का कल्यारण नहीं होगा

धन्यवाद,

श्री दिलीप यादव
संपादक, मेरीखेती

सलाहकार मंडल

श्री छेदालाल पाठक
संरक्षक मार्गदर्शक

श्री कृष्ण पाठक
फाउंडर, मेरीखेती

डॉ एम सी शर्मा
सेवानिवृत्त निदेशक एवं कुलपति आईवीआरआई
इज्जतनगर

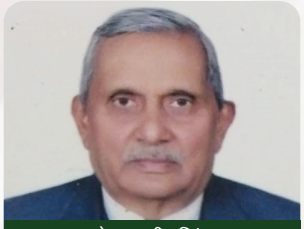

प्रो. ए पी सिंह
पूर्व कुलपति, वेटरनरी विश्व विद्यालय,
मथुरा

डॉ. एस. के. गर्ग
कुलपति राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ
वेटरनरी एंड एनिमल साइंस

डॉ हरि शंकर गौड़
पूर्व कुलपति एसबीबीपीयूएटी, मेरठ, साइंटिस्ट,
गलगोटिया विश्वविद्यालय

डॉ. ओमवीर सिंह
निदेशक बीज प्रमाणीकरण (सेवानिवृत्त)
उत्तर प्रदेश

डॉ उदय भान सिंह
डीन कृषि महाविद्यालय, कुम्हेर, भरतपुर,
राजस्थान

डॉ जे.पी.एस. डबास
वरिष्ठ वैज्ञानिक आई ए आरआई

डॉ एसके सिंह
प्रोफेसर सह मुख्य वैज्ञानिक डॉ. राजेंद्र प्रसाद
केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा बिहार

डॉ रितेश शर्मा
प्रधान वैज्ञानिक, बासमती निर्यात विकास फाउंडेशन
(एपीडा, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार)

डॉ सी बी सिंह
एक्स – सीनियर साइंटिस्ट, IARI, पूसा

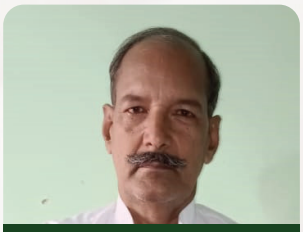

तेजपाल सिंह
प्रगतिशील किसान

ढैंचा की खेती से संबंधित विस्तृत जानकारी

भारत के विभिन्न राज्यों में किसान यूरिया के अभाव और कमी से जूझते हैं। यहां की विभिन्न राज्य सरकारों को भी यूरिया की आपूर्ति करने के लिए बहुत सारी समस्याओं और परेशानियों का सामना करना पड़ता है। आज हम आपको इस लेख में एक ऐसी फसल की जानकारी दे रहे हैं, जो यूरिया की कमी को पूर्ण करती है।

ढैंचा की खेती किसान भाइयों के लिए बेहद मुनाफेमंद है। क्योंकि यह नाइट्रोजन का एक बेहतरीन स्रोत मानी जाती है। भारत में फसलों की पैदावार को अच्छा खासा करने के लिए यूरिया का उपयोग काफी स्तर पर किया जाता है। क्योंकि, इससे फसलों में नाइट्रोजन की आपूर्ति होती है, जो पौधों के विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।परंतु, यूरिया जैव उर्वरक नहीं है, जिसकी वजह से प्राकृतिक एवं जैविक खेती का उद्देश्य पूर्ण नहीं हो पाता है। हालांकि, वर्तमान में सामाधान के तोर पर किसान ढैंचा की खेती पर अधिक बल दे रहे हैं। क्योंकि, ढैंचा एक हरी खाद वाली फसल है जो नाइट्रोजन का बेशानदार जरिया है। ढैंचा के इस्तेमाल के बाद खेत में किसी भी अतिरिक्त यूरिया की आवश्यकता नहीं पड़ती। साथ ही, खरपतवार जैसी समस्याएं भी जड़ से समाप्त हो जाती हैं।

ढैंचा की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु

उपयुक्त जलवायु– ढैंचा की शानदार उपज के लिए इसको खरीफ की फसल के साथ उगाते हैं। पौधों पर गर्म एवं ठंडी जलवायु का कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता है। परंतु, पौधों को सामान्य बारिश की आवश्यकता होती है। ढैंचा के पौधों के लिए सामान्य तापमान ही उपयुक्त माना जाता है। शर्दियों के दौरान अगर अधिक समय तक तापमान 8 डिग्री से कम रहता है, तो उत्पादन पर प्रभाव पड़ सकता है।

ढैंचा की खेती के लिए मिट्टी का चयन

ढैंचा के पौधों के लिए काली चिकनी मृदा बेहद शानदार मानी जाती है। ढेंचा का उत्पादन हर प्रकार की भूमि पर किया जा सकता हैं। सामान्य पीएच मान और जलभराव वाली जमीन में भी पौधे काफी अच्छे–तरीके से विकास कर लेते हैं।

ढैंचा की खेती के लिए खेत की तैयारी

सर्व प्रथम खेत की जुताई मृदा पलटने वाले उपकरणों से करनी चाहिए। गहरी जुताई के उपरांत खेत को खुला छोड़ दें, फिर प्रति एकड़ के हिसाब से 10 गाड़ी पुरानी सड़ी गोबर की खाद डालें और अच्छे से मृदा में मिला दें। अब खेत में पलेव कर दें और जब खेत की जमीन सूख जाए तो रासायनिक खाद का छिड़काव कर रोटावेटर चलवा देना चाहिए, जिसके पश्चात पाटा लगाकर खेत को एकसार कर देते हैं।

ढैंचा की फसल की बुवाई करने का समय

हरी खाद की फसल लेने के लिए ढैंचा के बीजों को अप्रैल में लगाते हैं। लेकिन उत्पादन के लिए बीजों को खरीफ की फसल के समय बारिश में लगाते हैं। एक एकड़ के खेत में करीब 10 से 15 किलो बीज की आवश्यकता होती है।

ढैंचा की फसल की रोपाई

बीजों को समतल खेत में ड्रिल मशीन के माध्यम से लगाया जाता हैं। इन्हें सरसों की भांति ही पंक्तियों में लगाया जाता है। पंक्ति से पंक्ति के मध्य एक फीट की दूरी रखते हैं और बीजों को 10 सेमी की फासले के लगभग लगाते हैं। लघु भूमि में ढैंचा के बीजों की रोपाई छिड़काव के तरीके से करना चाहिए। इसके लिए बीजों को एकसार खेत में छिड़कते हैं। फिर कल्टीवेटर से दो हल्की जुताई करते हैं, दोनों ही विधियों में बीजों को 3 से 4 सेमी की गहराई में लगाएं।

अप्रैल माह के कृषि सम्बन्धी आवश्यक कार्य

अप्रैल माह में ज्यादातर कार्य फसल की कटाई से सम्बंधित होते है। इस माह में किसान रबी फसलों की कटाई कर दूसरी फसलों की बुवाई करते है। इस माह में कृषि से सम्बंधित किये जाने वाले आवश्यक कार्य कुछ इस प्रकार है।

रबी फसलों की कटाई

गेहूँ, मटर, चना, जौ और मसूर आदि की फसल की कटाई का कार्य इस माह में ही किया जाता है। इन फसलों की कटाई सही समय पर होना बेहद जरूरी है। यदि फसल की कटाई सही समय पर नहीं होती है, तो फसल की उत्पादकता और गुणवत्ता पर काफी बुरा प्रभाव पड़ेगा। देर से कटाई करने पर फलियाँ और बालियाँ टूटकर गिरने लगती है। इसके अलावा चिड़ियों और चूहों के द्वारा भी इस फसल को नुक्सान पहुँचाया जा सकता है। फसल की कटाई का कार्य किसान स्वयं भी कर सकता है, या फिर मशीनों द्वारा भी इसकी कटाई करवा सकते है। कुछ किसान हँसिया द्वारा फसल की कटाई करवाते है, क्योंकि इसमें भूसे और दाने का बहुत कम नुक्सान होता है। कंबाइन द्वारा फसल की कटाई आसान होती है, और इसमें हँसिया के मुकाबले बहुत ही कम समय लगता है, और धन की भी बचत होती है। कंबाइन से कटाई करने के लिए फसल में 20% नमी होना जरूरी है। यदि फसल की कटाई दरांती आदि से की जा रही है तो फसल को अच्छे से सुखा ले, उसके बाद कटाई प्रारम्भ करें। फसल को लम्बे समय तक खेत में एकट्ठा करके न रखें। फसल को शीघ्र ही थ्रेसर आदि से निकलवा लें।

हरी खाद के लिए फसलों की बुवाई

अप्रैल माह में किसानों द्वारा भूमि की उपजाऊ क्षमता को बढ़ाने के लिए हरी खाद वाली फसलों की बुवाई की जाती है। हरी खाद की फसलों में ढेंचा को भी शामिल किया जाता है। ढेंचा की बुवाई का कार्य अप्रैल माह के अंत तक कर देना चाहिए। ढेंचा की खेती से मिट्टी में पोषक तत्वों की उपस्तिथी बनी रहती है।

चना और सरसों की कटाई

अप्रैल के महीने में सरसों, आलू और चना की कटाई हो जाती है। इन सभी फसलों की कटाई के बाद किसान उसमें तुरई, खीरा, टिण्डा, करेला और ककड़ी जैसी सब्जियां भी उगा सकता है। ध्यान रखें बुवाई करते वक्त पौधे से पौधे की दूरी 50 सेंटीमीटर से 100 सेंटीमीटर के बीच में रखें। यदि इन सभी सब्जियों की बुवाई कर दी गई हो, तो सिंचाई का विशेष रूप से ध्यान रखें। फसल के अधिक उत्पादन के लिए हाइड्रोजाइड और ट्राई आयोडो बेन्जोइक एसिड को पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

मूली और अदरक की बुवाई

रबी फसलों की कटाई के बाद इस माह में मूली और अदरक की बुवाई की जाती है। मूली की आर आर डब्ल्यू और पूसा चेतकी किस्म इस माह में उगाई जा सकती है। अदरक की बुवाई करने से पहले बीज उपचार कर लें। बीज उपचार के लिए बाविस्टीन नामक दवा का उपयोग करें।

टमाटर की फसल में लगने वाला कीट

टमाटर की बुवाई का कार्य अप्रैल माह से पहले ही कर दिया जाता है। अप्रैल माह में टमाटर की फसल को फल छेदक रोगों से बचाने के लिए मैलाथियान रासायनिक दवा को 1 मिली पानी में मिला कर छिड़काव कर दें। लेकिन छिड़काव करने से पहले पके फलों को तोड़ लें। छिड़काव करने के बाद फलों की 3 – 4 दिनों तक तुड़ाई न करें।

भिन्डी की फसल

वैसे तो भिन्डी के पौधो में ग्रीष्मकालीन से ही फल लगने शुरू हो जाते है। नरम और कच्चे फलों को उपयोग के लिए तोड़ लिया जाता है। भिन्डी में लगने वाले फलों को 3–4 दिन के अंतराल पर तोड़ लेना चाहिए। यदि फलो की देरी से तुड़ाई होती है, तो फल कड़वे और कठोर रेशेदार हो जाते है।

प्याज और लहसुन की खुदाई

अप्रैल माह में प्याज और लहसुन की खुदाई शुरू कर दी जाती है। प्याज और लहसुन की खुदाई करने से 15 –20 दिन पहले ही सिंचाई का काम बंद कर देना चाहिए। जब पौधा अच्छे से सूख जाए तभी उसकी खुदाई करें। पौधा सूखा है या नहीं इसकी पहचान किसान पौधे के सिरे को तोड़कर कर सकता है।

शिमला मिर्च की देख रेख

शिमला मिर्च की फसल में 8 –10 दिन के अंतराल पर सिंचाई करते रहना चाहिए। फसल में खरपतवार को कम करने के लिए निराई और गुड़ाई का काम भी करते रहना चाहिए। शिमला मिर्च की खेती को कीटों के प्रकोप से बचाने के लिए रोगेर 30 ई सी को पानी में मिलाकर छिड़काव करें। कीट का ज्यादा प्रकोप होने पर 10 –15 दिन के अंतराल पर फिर से छिड़काव कर सकते है।

बैंगन की फसल

बैंगन की फसल में निरंतर निग. रानी रखे, बैंगन की फसल में तना और फल छेदक कीटों की ज्यादा संभावनाएं रहती है। इसीलिए फसल को कीटों से बचाने के लिए कीटनाशक दवाइयों का उपयोग करें।

कटहल की फसल

गलन जैसे रोगों की वजह से कटहल की खेती खराब हो सकती है। इसकी रोकथाम के लिए जिंक कार्बामेट के घोल का छिड़काव करें।

जायद में गन्ना की बुवाई की वर्टिकल विधि और इसके क्या–क्या लाभ हैं ?

किसान भाई अब जायद सीजन की गन्ने की बिजाई करना शुरू करेंगे। समयानुसार गन्ने की बिजाई विधि में परिवर्तन देखने को मिलता है। गन्ना किसान रिंग पिट विधि, ट्रैच विधि और नर्सरी से पौधे लाकर गन्ने की बुवाई करते हैं। प्रत्येक गन्ना बिजाई विधि के अलग–अलग लाभ हैं। बीते कुछ समय से गन्ने की बुवाई के लिए वर्टिकल विधि काफी ज्यादा लोकप्रिय हो रही है। यह नवीन विधि सबसे पहले उत्तरप्रदेश के किसानों ने अपनाई थी। गन्ने की खेती में इस विधि के उपयोग से बीज कम लगता है और उपज ज्यादा मिलती है। अब किसान इस विधि को ज्यादा अपना रहे हैं।

वर्टिकल विधि के फायदे इस प्रकार हैं

गन्ने की वर्टिकल विधि से बिजाई करना काफी आसान है। इसमें बराबर मात्रा एवं सही दूरी पर पोरी लगाई जाती है एवं जमाव भी बराबर रहता है। साथ ही, मजदूरों की कम आवश्यकता पड़ती है। वर्टिकल विधि में कल्लों का फुटाव काफी अधिक होता है। 8 से 10 कल्ले सरलता से निकलते हैं। 4 से 5 क्विंटल बीज प्रति एकड़ तक लगता है। बीज पर भी काफी कम खर्चा होता है। इसमें एक आंख की कांची को काटकर सीधा लगाना होता है। इस विधि से बिजाई करने पर गन्ने का जमाव जल्दी होता है। वर्टिकल विधि के माध्यम से ज्यादा उत्पादन हांसिल होता है। इसमें एक समान कल्ले फूटते हैं और कल्लों में गन्ने भी समान मात्रा में निकलते हैं। वर्टिकल विधि से 500 क्विंटल प्रति एकड़ तक पैदावार हांसिल की जा सकती है।

गन्ने की वर्टिकल विधि क्या होती है ?

गन्ना बिजाई की वर्टिकल विधि में कतार से कतार का फासला 4 से 5 फीट और गन्ने से गन्ने का फासला लगभग 2 फीट रखा जाता है। इस विधि में एक एकड़ जमीन पर 5 हजार आंखे लगती हैं।

किसानों को कृषि वैज्ञानिकों के दिशा निर्देशन में खेती करनी चाहिए

कृषि वैज्ञानिकों की सलाह के मुताबिक, किसानों को गन्ना की एक ही किस्म पर सदैव निर्भर नहीं रहना चाहिए। वक्त–वक्त पर किस्म में बदलाव करना चाहिए। यदि किसान दीर्घ काल तक एक ही किस्म की बुवाई करते हैं, तो उसमें कई तरह के रोग लग जाते हैं और पैदावार में भी गिरावट होती है।

जायद में लौकी की खेती करने वाले किसानों के लिए महत्वपूर्ण जानकारी ?

भारत में सर्दियों का मौसम अब अपने अंतिम पड़ाव पर है और गर्मियां बिल्कुल शुरू होने की कगार पर हैं। इस मध्य बहुत सारे किसान फिलहाल गर्मियों में बोई जाने वाली लौकी की फसल लगाने की तैयारी कर रहे हैं। दरअसल, किसी भी फसल की खेती को लेकर कृषकों के मन में प्रश्न अवश्य होते हैं।

कुछ ऐसे ही सवाल लौकी की खेती करने वाले किसानों के मन में आते हैं। जैसे कि किस प्रकार से लौकी की खेती की जाए कि उपज बढ़े और उन्हें हानि भी न वहन करनी पड़े। गर्मी की फसल की बुवाई मार्च के पहले हफ्ते से अप्रैल महीने के पहले सप्ताह में की जाती है। गर्मी के मौसम में अगेती फसल लगाने के लिए कृषक इसके पौधे पॉली हाउस से खरीद सकते हैं और इन्हें सीधे अपने खेतों में लगा सकते हैं। इसके लिए प्लास्टिक बैग अथवा फिर प्लग ट्रे में कोकोपीट, परलाइट, वर्मीकुलाइट, 3रू1रू1 अनुपात में रखकर इसकी बुवाई करें।

लौकी की खेती करते समय ध्यान रखने योग्य बातें

लौकी की खेती से शानदार पैदावार पाने के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित किस्में पूसा नवीन, पूसा संतुष्टी, पूसा सन्देश लगा सकते हैं। इस फसल की बुवाई या रोपाई नाली बनाकर की जाती है। जहां तक संभव हो सके नाली की दिशा उत्तर से दक्षिण दिशा में बनाए और पौध व बीज की रोपाई नाली के पूर्व में करें। लौकी की खेती के लिए ग्रीष्म और आर्द्र जलवायु सबसे अच्छी होती है। लौकी के पौधे अधिक ठंड को सहन नहीं कर सकते हैं। इसलिए इनकी खेती विशेष रूप से मध्य भारत और आसपास के इलाकों में होती है। इसकी खेती के लिए 32 से 38 डिग्री सेंटीग्रेड का तापमान सबसे अच्छा होता है। इसका अर्थ है गर्म राज्यों में इसकी खेती काफी अच्छे से की जाती है। इसके अतिरिक्त खेती के लिए सही भूमि का चुनाव, बुवाई का समय, बीज उपचार, उर्वरक प्रबंधन, सिंचाई प्रबंधन, खरपतवार प्रबंधन, कीट प्रबंधन जैसी बातों को भी ध्यान में रखना आवश्यक है। अगर किसान इन सब बातों को ध्यान में रखकर खेती करें तो उपज भी शानदार होगी और मुनाफा भी दोगुना होगा।

बतादें, कि लौकी की बिजाई हेतु नाली की दूरी कितनी रखनी चाहिए। गर्मियों में नाली से नाली का फासला 3 मीटर। बरसात में नाली से नाली का फासला 4 मीटर रखें। पौध से पौध का फासला 90 सेंटीमीटर रखें। किसान भाई इस प्रकार कीटों से बचाव करें।

लाल कीड़ों का संक्रमण सबसे ज्यादा कब होता है

ध्यान रहे खेत में पौधे के 2 से 3 पत्ते आने के समय से ही लाल कीड़े यानी रेड पंम्पकीन बीटल कीडों का संक्रमण काफी ज्यादा होता है। इससे बचने के लिए किसान भाई डाईक्लोरोफांस की मात्रा 200 एमएल को 200 मिली लीटर पानी में घोल बनाकर 1 एकड़ की दर सें छिड़काव करें। इस कीट का खात्मा करने के लिए सूर्योदय से पहले ही छिड़काव करें। सूर्योदय के उपरांत ये कीट भूमि के अंदर छिप जाते हैं। जहां तक हो सके वहां तक बरसात में पौधों को मचान बनाकर उगाएं। इससे बरसात में पौधों के गलने की समस्या काफी कम होगी और पैदावार भी बेहतरीन मिलेगी।

Isabion

Amino Acids

Growth Regulator

उन्नति के साथ, विश्वास के साथ

syngenta

Flowers

Fruits

Roots

अप्रैल माह में उगाई जाने वाली फसलें और कृषि कार्यों की जानकारी

अप्रैल के महीने तक तकरीबन समस्त रबी फसलें कट जाती हैं। किसान भी अपनी फसलों का प्रबंधन करके मंडी पहुंचाने लगते हैं। अब जायद सीजन की फसलों की बुवाई की जानी हैं। ये फसलें फायदे के साथ–साथ मृदा की उपजाऊ शक्ति भी बढ़ा देती हैं। अप्रैल माह में उगाई जाने वाली ये फसलें आपको अच्छा खासा मुनाफा प्रदान कर सकती हैं। किसानों को कम समयांतराल में ही मिलेगी बंपर उपज।

रबी फसलों की कटाई और खरीफ सीजन से पूर्व कुछ ही माह बीच में खाली बच जाते हैं, जिसको जायद सीजन भी कहा जाता है। इस दौरान विभिन्न दलहनी और तिलहनी फसलें बोई जाती हैं, जो धान मक्का की खेती से पहले ही पककर तैयार हो जाती हैं। जायद सीजन में विशेष सब्जी फसलों की भी बुवाई की जाती हैं। इसके अतिरिक्त बहुत सारे लोग मृदा की उपजाऊ शक्ति बढ़ाने के लिए जायद सीजन में ढेंचा, लोबिया और मूंग की खेती भी करते हैं। इससे मृदा में नाइट्रोजन का स्तर काफी बढ़ जाता है।

खेत की तैयारी

रबी फसलों की कटाई के बाद सर्व प्रथम खेत में गहरी जुताई लगाएं और खेत को अच्छी तरह से तैयार कर लें। जायद सीजन की फसलों की बुवाई करने से पहले मृदा की अवश्य जांच करवा लें। इससे सही मात्रा में खाद–उर्वरक का इस्तेमाल करने की राहत मिल जाएगी और अनावश्यक खर्चों से राहत मिलेगी। हर फसल सीजन के पश्चात मृदा की जांच करवाने से इसकी कमियों का भी जाँच पहचान हो जाती है, जिन्हें वक्त रहते ठीक किया जा सकता है।

साठी मक्का और बेबी कॉर्न के लिए उपयुक्त समय

यह समय साठी मक्का और बेबी कॉर्न की खेती के लिए अनुकूल है। दोनों ही फसलें 60 से 70 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। फिर कटाई के पश्चात सहजता से धान की बिजाई का काम भी किया जा सकता है। इन दिनों बेबी कॉर्न भी काफी चलन में है। ये मक्का कच्चा ही बिक जाता है। होटलों में बेबी कॉर्न की सलाद, सब्जी, अचार, पकौड़े व सूप आदि काफी प्रसिद्ध हैं।

अप्रैल माह में उगाई जाने वाली सब्जी की फसलें

अप्रैल माह में किसान सब्जी फसलों की खेती भी कर सकते हैं। यह समय तोरई, बैंगन, लौकी, भिंडी और करेला की खेती के लिए बेहद अनुकूल है। मौसम की मार से जायद सीजन की फसलों को सुरक्षित रखने के लिए किसान पॉलीहाउस, ग्रीन हाउस अथवा लो टनल की व्यवस्था कर लें। इन संरक्षित ढांचों की स्थापना के लिए राज्य सरकारें किसान भाइयों को अनुदान भी मुहैया करवाती हैं।

दलहन में कौन–सी फसल के लिए सही समय और सलाह

अप्रैल का महीना उड़द की खेती के लिए बेहद अनुकूल माना जाता है। हालांकि, जलभराव वाले क्षेत्रों में इसकी बुवाई करने से बचना चाहिए। उड़द की खेती के लिए प्रति एकड़ 6–8 किलो बीजदर का उपयोग करें। इसकी खेत में बुवाई से पहले–पहले बीज को थीरम या ट्राइकोडर्मा से उपचारित अवश्य कर लें। किसान भाई दलहन उत्पादन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने की दिशा में अरहर की फसल ले सकते हैं। किसान उचित जल निकासी वाली मृदा में कतारों में अरहर की बुवाई करते हैं। ये फसल 60 से 90 दिनों में पककर कटाई के लिए तैयार हो जाती है। आप चाहें तो अरहर की लघु समयावधि वाली किस्मों की बुवाई भी कर सकते हैं।

सोयाबीन की फसल के लिए सही समय

सोयाबीन की फसल घरेलू उपयोग में आने वाली एक मुख्य फसल है। अप्रैल माह में बोई गई सोयाबीन की फसल में बीमा. रियां लगने की संभावना काफी कम रहती है।

ये फसल वातावरण में नाइट्रोजन स्थिरीकरण का काम करती है। पानी रुकने वाले क्षेत्रों में सोयाबीन की बुवाई करने से बचना चाहिए। किसान भाइयों को शानदार और बेहतरीन उपज पाने के लिए बुवाई से पहले खेत की 3 गहरी जुताईयां करने की सलाह दी जाती है।

गेंहू कटते ही करदें मूंगफली की बुवाई

अप्रैल के आखिरी सप्ताह तक मतलब कि गेहूं की कटाई के शीघ्रोपरान्त मूंगफली की फसल की बुवाई की जा सकती है। ये फसल अगस्त–सि. तंबर तक पककर तैयार हो जाएगी। परंतु, जलनिकासी वाले क्षेत्रों में ही मूंगफली की बुवाई करनी चाहिए। दरअसल, शानदार उत्पादन के लिए हल्की दोमट मिट्टी में बीजोपचार के पश्चात ही मूंगफली के दानों की बिजाई करें।

किसान ढेंचा की खेती भी कर सकते है

खरीफ सीजन की धान–मक्का की बिजाई से पूर्व किसान भाई ढेंचा यानी हरी खाद की फसल ले सकते हैं। इससे खाद–उर्वरकों पर खर्च होने वाली धनराशि सुगमता से बच जाएगी। ढेंचा की फसल 45 दिन के अंतर्गत लगभग 5 से 6 सिंचाईयों में पककर कटाई के लिए तैयार हो जाती है। इसके बाद धान की खेती करने पर उत्पादन की क्वालिटी और उपज शानदार मिलती है।

बेबी कॉर्न की खेती से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी

बेबी कॉर्न के अंदर कार्बोहाइड्रेड, कैल्सियम, प्रोटीन और विटामिन विघमान होता है। वहीं, इसको कच्चा या पका कर भी खाया जा सकता है। अपने इन गुणों की वजह से बेबी कॉर्न ने अपना एक बाजार विकसित किया है।

अब ऐसी स्थिति में किसानों के लिए इसकी पैदावार बेहद ही फायदेमंद है। मक्का की खेती करने से किसानों को अधिकांश अच्छा लाभ ही प्राप्त होता है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण इन दिनों दिखाई दे रहा है। आलम यह है, कि वर्तमान में किसान भाइयों को मक्के (डंप्रम) का भाव न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) से ज्यादा मिल रहा है। कुल मिलाकर भारत के अंदर मक्का, गेहूं और चावल के उपरांत तीसरे सबसे महत्वपूर्ण फसल (ब्तवच) बन कर उभरा है।

दरअसल, मक्के की खेती करने वाले किसानों को अच्छा मुनाफा हो रहा है। लेकिन, आज के दौर में मक्के की खेती विभिन्न प्रकार से किसान भाइयों के लिए लाभकारी सिद्ध हो सकती है, जिसमें बेबी कॉर्न (Baby Corn) का उत्पादन किसानों को दोगुना लाभ प्रदान कर सकता है। आगे जानेंगे बेबी कॉर्न और इसकी खेती के बारे में।

बेबी कॉर्न की बढ़ती खपत के चलते मांग में भी निरंतर वृद्धि

भारत ही नहीं बल्कि दुनियाभर में बेबी कॉर्न (ठंइल ब्वतद) की खपत और मांग दोनों तेजी से बढ़ रही है। पौष्टिकता के साथ ही अपने स्वाद की वजह से बेबी कॉर्न (ठंइल ब्वतद) ने अपना एक बाजार स्थापित किया है। वहीं, पत्तों के लिपटे होने की वजह से इसमें कीटनाशकों का असर नहीं होता है। इस वजह से भी इसकी मांग काफी अधिक है। ऐसे में बेबी कॉर्न का उत्पादन कैसे होता है, पहले यह जानना अत्यंत आवश्यक है। वास्तविकता में बेबी कॉर्न (Baby Corn) मक्के की शुरूआती अवस्था है, जिसे अपरिपक्व मक्का अथवा शिशु मक्का भी कहा जाता है। मक्के की फसल में भुट्टा आने के उपरांत एक निर्धारित समय में इसको तोड़ना पड़ता है।

सालभर में 4 बार उपज के साथ मवेशियों के लिए चारा

बेबी कॉर्न (Baby Corn) का उत्पादन किसान भाइयों के लिए अत्यंत फायदेमंद होता है। बतादें, कि बेबी कॉर्न की बुवाई होने के बाद 50 से 55 दिन में उत्पादन लिया जा सकता है। इस तरह किसान एक साल में बेबी कॉर्न (Baby Corn) की 4 फसलें कर सकते हैं, जिसमें किसान प्रति एकड़ 4 से 6 क्विंटल बेबी कॉर्न की उपज ले सकते हैं। साथ ही, मक्के की फसल से बेबी कॉर्न (Baby Corn) तोड़ लेने के पश्चात पशुओं के लिए चारे की व्यवस्था भी सहजता से हो जाती है। किसान 80 से 160 क्विंटल हरे चारे का उत्पादन कर सकते हैं।

किसान बेबी कॉर्न की तुड़ाई कब करें

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि दक्षिण भारत में वर्षभर बेबी कॉर्न की खेती की जा सकती है। वहीं, उत्तर भारत में फरवरी से नंवबर के मध्य बेबी कॉर्न की पैदावार की जा सकती है। मक्का अनुसंधान निदेशालय पूसा की एक रिपोर्ट के मुताबिक, बेबी कॉर्न का उत्पादन सामान्य मक्के की खेती की भांति ही है।

हालाँकि, कुछ विशेष सावधानियां बरतने की अत्यंत आवश्यकता होती है, जिसके अंतर्गत किसान को बेबी कॉर्न के उत्पादन के लिए मक्के की एकल क्रास संकर किस्म की बुवाई करनी चाहिए। किसान एक हेक्टेयर में 20 से 24 केजी बीज का इस्तेमाल कर सकते हैं। बेबी कॉर्न की खेती के लिए ज्यादा पौधे लगाने चाहिए। इस कारण से उर्वरक का अधिक इस्तेमाल करना पड़ता है। साथ ही, तुड़ाई के समय का भी विशेष ध्यान रखना होता है। इसके अंदर सिल्क आने के बाद 24 घंटे के अंदर तुड़ाई आवश्यक है। सिल्क की लंबाई लगभग 3 से 4 सेमी होनी चाहिए। तोड़ने के बाद पत्ते नहीं हटाने से बेबी कॉर्न दीर्घकाल तक ताजा रहते हैं।

कनाडा ने भारत से बेबी कॉर्न आयात की मांग की

बेबी कॉर्न के अंदर विभिन्न प्रकार के पौष्टिक गुण विघमान होते हैं। इसमें प्रमुख रूप से बेबी कॉर्न के अंदर कैल्सियम, प्रोटीन, विटामिन और कार्बोहाइड्रेड होता है। वहीं, इसे कच्चा या पका कर भी खाया जा सकता है। अपने इन गुणों के कारण बेबी कॉर्न ने अपना एक बाजार विकसित किया है। बीते दिनों बेबी कॉर्न के आयात के लिए कनाडा ने भारत सरकार के साथ बातचीत भी की है।

खरबूजे की खेती के लिए 5 अव्वल दर्जे की किस्मों की जानकारी ?

किसान भाइयों के लिए खरबूजे की खेती गर्मियों में काफी लाभदायक साबित होती है। गर्मियों के लिए खरबूज की खेती करना किसानों के लिए बड़े मुनाफे का सौदा है। यदि आप भी खरबूजे की खेती करने का विचार बना रहे हैं, आज का यह लेख आपके लिए ही है।

क्योंकि, आज के इस लेख में हम आपको खरबूजे की टॉप 5 उन्नत किस्मों की जानकारी प्रदान करेंगे। दरअसल, हम उन किस्मों से आपका परिचय कराएंगे जो कि उच्च तापमान में भी शानदार उत्पादन देने में सक्षम हैं। बाजार में गर्मियों के दौरान खरबूजों की मांग में काफी बढ़ा इजाफा देखने को मिलता है।

सर्वाधिक खरबूजे की खेती करने वाले राज्य इस प्रकार हैं

दरअसल, खरबूजे की खेती ऐसे में अगर आप अपने खेत में खरबूजे की उन्नत किस्मों की खेती (Cultivation of Varieties of Melon) करते हैं, तो आप अच्छा मुनाफा हांसिल कर सकते हैं।

इसी कड़ी में आज हम आपके लिए खरबूजे की टॉप 5 उन्नत किस्मों की जानकारी लेकर आए हैं। खरबूजे की ये किस्में पूसा शरबती (एस–445), पूसी मधुरस, हरा मधु, आई.वी.एम.एम.3 और पंजाब सुनहरी (Pusa Sharbati (S&445), Pusa Madhuras] Hara Madhu] IVMM3 and Punjab Golden) हैं।

ये समस्त किस्में 22 से 25 डिग्री सेल्सियस में शानदार उत्पादन देती हैं। इसके अतिरिक्त खरबूजे की ये किस्में कम समयावधि में शीघ्रता से पककर तैयार हो जाती हैं। बतादें, कि खरबूजे की खेती हरियाणा, महाराष्ट्र, बिहार, उत्तर प्रदेश, पंजाब, राजस्थान और मध्य प्रदेश के किसानों के द्वारा सबसे ज्यादा की जाती है।

खरबूजे की टॉप 5 उन्नत किस्में निम्नलिखित हैं

खरबूजे की पूसा शरबती (एस–445) किस्म: खरबूजे की यह किस्म किसानों के लिए अत्यंत लाभदायक होती है। खरबूजे की पूसा शरबती (एस–445) किस्म के फल गोल, मध्यम आकार के होते हैं। इसकी फसल के छिलके हल्के गुलाबी होते हैं। साथ ही, इसका गूदा मोटा और नारंगी होता है।

खरबूजे की पूसा मधुरस किस्म: खरबूजे की पूसा मधुरस किस्म के फल भी गोल और चपटे होते हैं। इसके फल गहरे हरे रंग के होते हैं। इस फल का गूदा भी नारंगी होता है। पूसा मधुरस किस्म के फल का औसतन वजन 700 ग्राम तक होता है।

खरबूजे की हरा मधु किस्म: इस किस्म के फल पर भी हरे रंग की धारियां उपस्थित होती हैं। हरा मधु किस्म के खरबूजे हल्के पीले रंग के होते हैं। इसका गूदा बेहद रसीला होता है।

खरबूजे की आई.वी.एम.एम.3 किस्म: I-V-M-M-3 किस्म के खरबूजे हल्के पीले रंग के होते हैं। इसका गूदा मीठा और नारंगी रंग का होता है। वहीं, इस किस्म के खरबूजे का औसतन भार लगभग 500–600 ग्राम होता है।

खरबूजे की पंजाब सुनहरी किस्म: खरबूजे की पंजाब सुनहरी किस्म के फल गोलाकार और हल्के पीले रंग के होते हैं। साथ ही, इस किस्म के फल का गूदा नारंगी होता है। इसके साथ ही पंजाब सुनहरी किस्म का खरबूजा रसदार होता है।

जायद सीजन में लाल भिंडी की खेती आपको मालामाल बना सकती है

भिंडी की सब्जी का सेवन करना बहुत सारे लोगों को काफी प्रिय होता है। यही वजह है, कि मंडियों में इसका अच्छा भाव मिलता है। क्योंकि कुछ लोग इसकी सूखी सब्जी बनाते हैं तो कुछ भरवां भिंडी खाना पसंद करते हैं।

ऐसा कहना गलत नहीं होगा की यह एक लोकप्रिय सब्जी है। आपने भी कभी न कभी भिंडी की सब्जी अवश्य खाई होगी। जब भी भिंडी की बात होती है, तो हमारे मन में हरे रंग की भिंडी का विचार आता है। परंतु, क्या आप जानते हैं, कि भिंडी केवल हरी नहीं, बल्कि लाल रंग की भी होती है। जी हां, हरी भिंडी की भांति लाल भिंडी भी खाने में बेहद स्वादिष्ट होती है। हालांकि, लाल भिंडी की कीमत हरी भिंडी से अधिक होती है। इन दिनों बहुत सारे किसान भाई लाल भिंडी की खेती कर इससे मोटा मुनाफा अर्जित कर रहे हैं। ऐसे में आज हम आपको लाल भिंडी की खेती के बारे में बताऐंगे।

लाल भिंडी की दो उन्नत किस्में

वर्तमान में लाल भिंडी की केवल दो ही उन्नत किस्में विकसित हुई हैं। साथ ही, किसान इन किस्मों की खेती करके मोटा लाभ उठा रहे हैं। इनमें, आजाद कृष्णा और काशी लालिमा शामिल हैं।

किसान भाई घर बैठे इस प्रकार मंगवाएं बीज

अगर किसान लाल भिंडी की उन्नत किस्म श्काशी लालिमाश और श्आजाद कृष्णाश का बीज घर पर पाना चाहते हैं, तो घर बैठे ऐसा कर सकते हैं। दरअसल, इसके लिए किसान राष्ट्रीय बीज निगम (National Seeds Corporation) की सुविधा का लाभ उठा सकते हैं। दरअसल, किसानों की सुविधा के लिए राष्ट्रीय बीज निगम भिंडी की उन्नत किस्मों के बीज ऑनलाइन बेच रहा है। इनके बीजों को आप ओएनडीसी के ऑनलाइन स्टोर से खरीद सकते हैं। यहां किसानों को विभिन्न अन्य प्रकार की फसलों के बीज भी सुगमता से मिल जाऐंगे। किसान इसको ऑनलाइन माध्यम से ऑर्डर करके अपने घर पर डिलीवरी करवा सकते हैं। फिलहाल, राष्ट्रीय बीज निगम भिंडी के बीजों की खरीद पर काफी भारी अनुदान दे रहा है।

अगर आप लाल भिंडी की प्रजाति श्काशी लालिमाश खरीदना चाहते हैं, तो इसके बीज का 100 ग्राम का पैकेट 40 फीसदी की छूट के साथ मात्र 45 रुपये में मिल रहा है।

काशी लालिमा और आजाद कृष्णा किस्मों की विशेषताऐं ?

काशी लालिमारू काशी लालिमा किस्म की लाल भिंडी की खेती रबी और खरीफ दोनों सीजन में सुगमता से की जा सकती है। हालांकि, इसके लिए आपको बीज खरीदते समय यह ध्यान देना पड़ेगा कि वह किस सीजन के बीज हैं। किसान जिस खेत में भी भिंडी की खेती करें, उसमें ध्यान रखें कि पानी ना रुके, वरना पौधे खराब हो सकते हैं। इस किस्म की फसल शीघ्रता से तैयार हो जाती है और ज्यादा समय तक फल प्रदान करती है। इसमें 45–50 दिन में ही फल मिलने चालू हो जाते हैं और लगभग 6 महीने तक मिलते रहते हैं। आजाद कृष्णारू आजाद कृष्णा भिंडी का उत्पादन 80 से 100 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होता है। एंटीऑक्सीडेंट व एंथोसाइनिन होने की वजह से यह स्वास्थ्य के लिए तो लाभदायक होती ही है।

साथ ही, इसके सूखने के बाद गुड़ साफ करने में भी इसका उपयोग किया जा सकता है। कृषि वैज्ञानिकों के मुताबिक, इस किस्म की फसल भी काफी शीघ्रता से तैयार हो जाती है। इसके पौधे की ऊँचांई 100–125 सेमी तक होती है। गर्मयों में ये किस्म 40–45 तथा बरसात के दौरान 50–55 दिनों में उपज देना प्रारंभ कर देती है।

लाल भिंडी के क्या–क्या फायदे हैं ?

लाल भिंडी की कीमत हरी भिंडी से ज्यादा होती है। केवल इतना ही नहीं लाल भिंडी में हरी भिंडी से ज्यादा पौष्टिकता विघमान रहती है। लाल भिंडी स्वास्थ्य के लिए भी बेहद उपयुक्त है। इसमें एंटीऑक्सीडेंट और आयरन होता है। इसका सेवन करने से बहुत सारी बीमारियों से छुटकारा मिलता है। लाल भिंडी से लोगों को मधुमेह और दिल से जुड़ी बिमारियों में भी फायदा पहुंचता है। इसी वजह से लाल भिंडी की बाजार में खूब मांग रहती है।

इस तकनीक से शिमला मिर्च की खेती कर किसान कमा रहा लाखों का मुनाफा ?

खेती–किसानी के तौर तरीकों में समय के साथ–साथ बदलाव आया है। किसान अपनी फसलों का उत्पादन पॉली हाउस जैसी उन्नत तकनीकों के जरिए कर रहे हैं।

दरअसल, पॉली हाउस आधुनिकता से भरी एक उन्नत तकनीक है। इस तकनीक के जरिए खेती करने से फसल पर मौसम का प्रभाव भी नहीं पड़ता है। साथ ही, किसानों की भी तगड़ी कमाई होती है। यदि आप भी परम्परागत खेती कर के ऊब चुके हैं और चाहते हैं कुछ नया करना तो आज का यह लेख आपके लिए बेहद उपयोगी साबित होगा। किसान भाई अब परंपरागत खेती की वजाय लाल–पीली शिमला मिर्च उगा रहे हैं। इससे उनको साल में लाखों का मुनाफा भी हांसिल हो रहा है।

खेती करने से पहले मृदा एवं जल की जाँच

आजकल आधुनिकता के बढ़ते अब खेती की तकनीक भी बदल रही हैं। किसान भाई खेती करने के लिए नई तकनीकों को इस्तेमाल कर रहे हैं। उत्तर प्रदेश के हाथरस में एक किसान पॉली हाउस में शिमला मिर्च की जैविक खेती कर तगड़ा मुनाफा प्राप्त कर रहा है।

हाथरस जनपद के गांव नगला मोतीराय के मूल निवासी सेवानिवृत शिक्षक श्याम सुंदर शर्मा और उनके बेटे अमित शर्मा ने लगभग 6 साल पहले पॉली हाउस लगाकर रंग–बिरंगी शिमला मिर्च की खेती शुरू की थी। रंग बिरंगी शिमला मिर्च की खेती शुरू करने से पहले उन्होंने खेत की मिट्टी–पानी आदि की जांच कराई।

किसान कैसे कमा रहा अच्छा मुनाफा

श्याम सुंदर शर्मा ने बताया है, कि फसल को कीट और रोग मुक्त करने के लिए भी जैविक तकनीकी का प्रयोग किया जाता है। आम शिमला मिर्च के मुकाबले रंग–बिरंगी शिमला मिर्च बाजार में अच्छे रेटों पर बिकती है। उन्होंने आगे बताते हुए कहा, कि उनका ये पॉली हाउस एक एकड़ में फैला हुआ है। रंग–बिरंगी शिमला मिर्च की खेती से वह साल भर में लगभग 12 से 14 लाख रुपये की आमदनी कर लेते हैं।वहीं, पिता की खेती में मदद कर रहे श्याम सुंदर शर्मा के पुत्र अमित शर्मा बताते हैं, कि ये काम मन को तसल्ली देने वाला है। लाल–पीली शिमला मिर्च का मार्केट आगरा और दिल्ली में है। गाड़ी लोड होकर मंडी पहुंच जाती है और पैसा आ जाता है। वह अन्य किसानों को भी पॉली हाउस लगाकर रंग–बिरंगी शिमला मिर्च की खेती करने की सलाह देते हैं।

IIL के फसल सुरक्षा उत्पादों के संग
सुरक्षित फसल , जिम्मेदार कल
IIL
SHINWA
PATENTED
SOFIA
TORRY
IZUKI
KUNOICHI
GREEN LABEL
HERCULES
INSECTICIDE
insecticides
(INDIA) LIMITED
हर क़दम, हम क़दम

गर्मियों में हल्दी की खेती कर किसान शानदार उत्पादन उठा सकते हैं

रबी की फसलों की कटाई का समय आ गया है। अब कुछ दिनों के बाद हल्दी उत्पादक किसान हल्दी की खेती के लिए बुवाई शुरू करेंगे। संपूर्ण भारत के करीब हर घर में सामान्यतः हल्दी का उपयोग किया जाता है। यह एक काफी ज्यादा महत्वपूर्ण मामला है। भारत के अंदर इसकी खेती भी बड़े पैमाने पर की जाती है।

बहुत सारे राज्यों में इसका उत्पादन किया जाता है। हल्दी की खेती करने के दौरान किसान भाइयों को कुछ विशेष बातों का खास ध्यान रखना होता है। ताकि उनको हल्दी उत्पादन से तगड़ा मुनाफा प्राप्त हो एवं उन्हें बेहतरीन उपज हांसिल हो सके। आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि हल्दी की खेती के लिए रेतीली दोमट मृदा या मटियार दोमट मृदा काफी अच्छी होती है। हल्दी की बिजाई का समय भिन्न–भिन्न किस्मों के आधार पर 15 मई से लेकर 30 जून के मध्य होता है। वहीं, हल्दी की बुवाई के लिए कतार से कतार का फासला 30–40 सेमी और पौध से पौध की दूरी 20 सेमी रखनी चाहिए। हल्दी की बुवाई के लिए 6 क्विंटल प्रति एकड़ बीज की आवश्यकता होती है।

हल्दी की फसल कितने समय में तैयार होती है ?

हल्दी की खेती के लिए खेत में जल निकासी की बेहतरीन व्यवस्था होनी चाहिए। हल्दी की फसल 8 से 10 माह के अंदर तैयार हो जाती है। सामन्यतः फसल की कटाई जनवरी से मार्च के दौरान की जाती है। फसल के परिपक्व होने पर पत्तियां सूख जाती हैं और हल्के भूरे से पीले रंग में बदल जाती हैं। हल्दी की खेती काफी सुगमता से की जा सकती है और इसे छाया में भी आसानी से उगाया जा सकता है। किसानों को इसकी खेती करते समय नियमित तौर पर निराई–गुड़ाई करनी चाहिए, जिससे खरप. तवारों की वृद्धि रुकती है और फसल को पोषक तत्वों की प्राप्ति होती है।

हल्दी की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु

दरअसल, हल्दी गर्म एवं उमस भरी जलवायु में बेहतरीन ढंग से उगती है। इसके लिए 20 से 30 डिग्री सेल्सियस तापमान उपयुक्त होता है। हल्दी के लिए अच्छी जल निकासी वाली, दोमट अथवा बलुई दोमट मृदा अच्छी होती है। मिट्टी का पीएच 6.5 से 8.5 के मध्य होना चाहिए। हल्दी की अच्छी पैदावार के लिए खाद का उचित इस्तेमाल करना आवश्यक है। गोबर की खाद, नीम की खली और यूरिया का इस्तेमाल काफी लाभदायक होता है। कटाई की बात की जाए तो हल्दी की फसल 9–10 माह के अंदर पककर तैयार हो जाती है। कटाई होने के बाद इसे धूप में सुखाया जाता है।

हल्दी को तैयार होने में कितना समय लगता है ?

हल्दी की बुवाई जून–जुलाई महीने के दौरान की जाती है। बुवाई के लिए स्वस्थ और रोग मुक्त कंदों का चुनाव करना बेहद आवश्यक है। सिंचाई की बात की जाए तो इसे नियमित तौर पर सिंचाई की जरूरत होती है। किसान भाइयों को इसकी खेती करने के दौरान नियमित रूप से निराई–गुड़ाई करनी चाहिए, जिससे खरपतवारों का खतरा समाप्त एवं फसल को पोषक तत्वों की प्राप्ति होती है। फसल कटाई की बात की जाए तो हल्दी की फसल 9–10 महीने के अंदर पककर तैयार हो जाती है।

हल्दी की बेहतरीन किस्में इस प्रकार हैं ?

समयावधि के आधार पर इसकी किस्मों को तीन भागों में विभाजित की गई हैं

- शीघ्र काल में तैयार होने वाली 'कस्तुरी' वर्ग की किस्में – रसोई में उपयोगी, 7 महीने में फसल तैयार, शानदार उपज। जैसे–कस्तुरी पसुंतु।
- मध्यम समय में तैयार होने वाली केसरी वर्ग की किस्में – 8 महीने में तैयार, अच्छी उपज, अच्छे गुणों वाले कंद। जैसे–केस. री,अम्रुथापानी, कोठापेटा।
- दीर्घ काल में तैयार होने वाली किस्में – 9 महीने में तैयार, सबसे अधिक उपज, गुणों में सर्वेश्रेष्ठ। जैसे दुग्गीराला, तेकुरपेट, मिदकुर, अरमुर। व्यवसायिक स्तर पर दुग्गीराला व तेकुपेट की खेती इनकी उच्च गुणवत्ता की वजह से की जाती है। इसके अतिरिक्त सुगंधम, सुदर्शना, रशिम, मेघा हल्दी–1, मीठापुर और राजेन्द्र सोनिया हल्दी की अन्य किस्में है।

जैविक ढंग से खेती करना सर्वोत्तम विकल्प है

विशेषज्ञों की मानें तो हल्दी की खेती के लिए जैविक विधि का इस्तेमाल करना बेहद आवश्यक है। इसकी फसल को मिश्रित खेती के रूप में भी उगाया जा सकता है। हल्दी की उन्नत किस्मों की खेती करके किसान भाई अधिक उपज हांसिल कर सकते हैं।

मार्च–अप्रैल में इन टॉप सब्जियों की खेती से मिलेगा मोटा मुनाफा

आजकल रबी की फसल की कटाई का समय चल रहा है। मार्च–अप्रैल में किसान सब्जियों की बुवाई करना शुरू कर देते हैं। लेकिन किसान कौन सी सब्जी का उत्पादन करें इसका चयन करना काफी कठिन होता है। किसानों को अच्छा मुनाफा देने वाली सब्जियों के बारे में हम आपको जानकारी देने वाले हैं।

दरअसल, आज हम भारत के कृषकों के लिए मार्च–अप्रैल के माह में उगने वाली टॉप 5 सब्जियों की जानकारी लेकर आए हैं, जो कम वक्त में बेहतरीन उपज देती हैं।

भिंडी की फसल (Okra Crop)

भिंडी मार्च–अप्रैल माह में उगाई जाने वाली सब्जी है। दरअसल, भिंडी की फसल (Bhindi Ki Fasal) को आप घर पर गमले अथवा ग्रो बैग में भी सुगमता से लगा सकते हैं। भिंडी की खेती के लिए तापमान 25–35 डिग्री सेल्सियस उपयुक्त माना जाता है। आमतौर पर भिंडी का इस्तेमाल सब्जी बनाने में और कभी–कभी सूप तैयार करने में किया जाता है।

खीरा की फसल (Cucumber Crop)

किसान भाई खीरे की खेती (Cucumber cultivation) से काफी अच्छा लाभ कमा सकते हैं। दरअसल, खीरा में 95% प्रतिशत पानी की मात्रा होती है, जो गर्मियों में स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी होती है। गर्मियों के मौसम में खीरा की मांग भी बाजार में काफी ज्यादा देखने को मिलती है। अब ऐसी स्थिति में अगर किसान अपने खेत में इस समय खीरे की खेती करते हैं, तो वह काफी शानदार कमाई कर सकते हैं। खीरा गर्मी के सीजन में काफी अच्छी तरह विकास करता है। इसलिए बगीचे में बिना किसी दिक्कत–परेशानी के मार्च–अप्रैल में लगाया जा सकता है।

बैंगन की फसल (Brinjal Crop)

बैंगन के पौधे (Brinjal Plants) को रोपने के लिए दीर्घ कालीन गर्म मौसम की आवश्यकता होती है। साथ ही, बैंगन की फसल के लिए तकरीबन 13–21 डिग्री सेल्सियस रात का तापमान अच्छा होता है। क्योंकि, इस तापमान में बैंगन के पौधे काफी अच्छे से विकास करते हैं। ऐसी स्थिति में यदि आप मार्च–अप्रैल के माह में बैंगन की खेती (baingan ki kheti) करते हैं, तो आगामी समय में इससे आप अपनी आमदनी को बढ़ा सकते हैं।

धनिया की फसल (Coriander Crop)

एक अध्यन के अनुसार, हरा धनिया एक प्रकार से जड़ी–बूटी के समान है। हरा धनिया सामान्य तौर पर सब्जियों को और अधिक स्वादिष्ट बनाने के कार्य करता है। इसे उगाने के लिए आदर्श तापमान 20 से 30 डिग्री सेल्सियस काफी अच्छा माना जाता है। ऐसे में भारत के किसान धनिया की खेती (Coriander Cultivation) मार्च–अप्रैल के माह में सुगमता से कर सकते हैं।

प्याज की फसल (Onion Crop)

प्याज मार्च–अप्रैल में लगाई जाने वाली सब्जियों में से एक है। प्याज की बुवाई के लिए 10–32 डिग्री सेल्सियस तापमान होना चाहिए। प्याज के बीज हल्के गर्म मौसम में काफी अच्छे से विकास करते हैं। इस वजह से प्याज रोपण का उपयुक्त समय वसंत ऋतु (Spring season) मतलब कि मार्च– अप्रैल का महीना होता है। बतादें, कि प्याज की बेहतरीन प्रजाति के बीजों की फसल लगभग 150–160 दिनों में पककर कटाई के लिए तैयार हो जाती है। हालांकि, हरी प्याज की कटाई (Onion Harvesting) में 40–50 दिन का वक्त लगता है।

जायद में इन फसलों की खेती से किसानों को अच्छा लाभ मिलेगा

जायद की फसल हम रबी की फसल काटने के उपरांत शुरू कर देते हैं। गेहूं की कटाई अप्रैल माह तक हो जाती है। इसके बाद ही हम अपने खेतों को फिर से तैयार करके उनमें जायद की फसलों को उगने के लिए तैयारियां शुरू कर देते हैं।

जायद की फसल काफी मोटी कमाई देने वाली होती है। किसान भाई जायद की फसल को बाजार में सीधे–तौर पर बेच सकते हैं। साथ ही, इनको उत्पादित करने में अधिक शारीरिक श्रम की आवश्यकता भी नहीं पड़ती है। इनमें बहुत सी फसलें तो बेलदार होती हैं, जिनके फल या सब्जियां हमें मोटा मुनाफा देती हैं। किसानों को रबी, खरीब और जायद की समस्त फसलों के लिए अपने खेतों को समय से तैयार करना होता है। इसमें जो सबसे कम समयावधि में तैयार होने वाली फसल है, वह जायद की फसल होती है।

जायद में कौन – कौन सी फसलें अच्छा मुनाफा देंगी

भारत में हम तीन मौसम की फसलों को विशेष महत्त्व देते हैं और इन्हीं फसलों के आधार पर हम वर्षभर होने वाली फसलों को विभाजित करतें हैं। बहुत सारी फसलें तो ऐसी होती हैं, जो वर्षभर में दो बार भी की जाती हैं। जायद की फसलें विशेष रूप से गर्मियों में पसंद की जाने वाली सब्जियां, दाल और फल होते हैं। यह फसलें तैयार होने में तकरीबन 60 से 65 दिन ले लेती हैं। इनकों हम नगदी फसलों के तौर पर भी जानते हैं।

मूंग की खेती

रबी की फसल की कटाई के बाद हम मूंग की तैयारी करते हैं। मूंग की बुवाई के बाद फसल को तैयार होने में लगभग 60 से 65 दिन लगते हैं। बाजार में इसे बेहद आसानी से बेच कर काफी मोटा मुनाफा कमाया जा सकता है। लागत के मुताबिक, प्रति बीघा में हम डेढ़ से दो क्विंटल तक मूंग पैदा कर सकते हैं।

उड़द की फसल

यह दलहनी फसल गेहूं की कटाई के बाद उगाई जाती है। जायद सीजन की 60 से 65 दिन की इस फसल में किसानों को कम लागत के साथ मोटा मुनाफा मिलता है। नगदी की यह फसल आप घर के लिए या बाजार में बड़ी आसानी से बेच सकते हैं।

तरबूज की खेती

जायद की यह फसल गर्मियों के दिनों सर्वाधिक पसंद की जाने वाली फसल होती है। फलों में हमारे शरीर की बहुत सारी आवश्यकताओं को पूरा करने वाली यह फसल थोक और फुटकर बाजार दोनों ही जगह किसानों को शानदार कमाई करवाती है। बतादें, कि फुटकर बाजार में इसकी कीमत 25 रुपये से लेकर 100 रुपये प्रति पीस तक होती है।

खरबूजे की खेती

तरबूज की ही भांति खरबूजे की खेती भी गर्मियों में ही की जाती है। बाजार में हमें इसकी शानदार कीमत मिलती है। यह एक ऐसी फसल होती है, जिसके फल की कीमत तो मिलती ही है। परंतु, यदि हम इनके बीजों को व्यवसायिक रूप में उपयोग करते हैं तो और भी अच्छी आय अर्जित कर सकते हैं।

टमाटर की खेती

टमाटर एक ऐसी फसल है जो लगभग हर एक सब्जी के साथ प्रयोग होती है. लोग इसे सलाद के रूप में खाना भी बहुत पसंद करते हैं। वैसे तो टमाटर को हम साल भर खाते हैं। परंतु, इसकी प्रमुख फसल जायद में ही की जाती है। थोक और फुटकर बाजार में इससे अच्छी कमाई की जा सकती है। जायद की इन फसलों से किसान भाई कम लागत में ही अच्छी आमदनी कर सकते हैं। यह बेहद ही सरलता से उगाई जाने वाली फसलें होती हैं। यह ऐसी फसलें होती हैं, जो अन्य फसलों की अपेक्षा शीघ्र उत्पादित हो जाती हैं। परिणामस्वरूप समय से अगली फसल की तैयारी के लिए मुनाफा प्राप्त कर लेते हैं।

अप्रैल माह में उद्यान फसलों से सम्बन्धित आवश्यक कार्य

अप्रैल माह में बहुत सी ऐसी फसले है जिनका उत्पादन कर किसान आर्थिक लाभ उठा सकता है। लाभ कमाने के लिए किसान को इन सभी फसलों पर विशेष रूप से ध्यान देना होगा।

- अप्रैल माह में नींबूवर्गीय फलों को गिरने से रोकने के लिए 2 ,4 डी के 10 पी पी एम को 10 मिली पानी में मिलाकर छिड़काव करें
- बरसात के मौसम में लगाए गए बागों और अन्य आँवला जैसे पौधो की देखभाल करते रहें। पौधो में नराई – गुड़ाई और सिंचाई जैसे कार्यों का विशेष रूप से ध्यान रखें।
- अप्रैल माह में बेल और पपीता के फलों की तुड़ाई भी की जाती है। इसीलिए समय पर इन फलों की तुड़ाई करके बाजार में बेचने हेतु भेज दिए जाने चाहिए।
- आम के पौधे में वृद्धि के लिए समय समय पर सिंचाई और नराई – गुड़ाई जैसे काम करते रहना चाहिए। इसके लिए पोषक तत्वों का भी उपयोग किया जा सकता है। 2 वर्ष के पौधे के लिए 250 ग्राम फॉस्फोरस, 50 ग्राम नाइट्रोजन और 500 ग्राम पोटाश का उपयोग करें।
- रजनीगंधाऔर गुलाब के फूलों की भी बुवाई अप्रैल में की जाती है। इन फूलों में समय समय पर नराई और गुड़ाई जैसे कार्य करते रहना चाहिए। साथ ही इन फूलों में सुखी टहनियों को भी निकाल देना चाहिए।
- गर्मियों के अप्रैल माह में होने वाले फूलों जैसे पोर्चूलाका, कोचिया और जिनिया पर विशेषकर ध्यान दें। सिंचाई और नराई – गुड़ायी से सम्बंधित सभी कार्य समय समय पर करते रहना चाहिए।
- पॉपुलर के पौधो पर अच्छे से निगरानी रखें। पॉपुलर के पौधों में दीमक कीट का ज्यादा प्रकोप होता है। इस कीट के प्रकोप को नियंत्रित करने के लिए क्लोरपाइरीफोस का पौधो पर छिड़काव करें।
- अप्रैल माह में ग्लोडियोलस फूल की तुड़ाई की जाती है। फूल को तोड़ने के बाद कुछ दिनों के लिए छाया में अच्छे से सुखाए। उसके बाद फूलों से मिलने वाले बीज को 2% मैंकोजेब पाउडर से उपचारित करें।
- आम के फलों को गिरने से रोकने के लिए ऍन ऍन ऐ के 15 पी पी एम घोल का छिड़काव करें। साथ ही आम के फलों का आकर बढ़ाने के लिए 2% यूरिया के घोल का छिड़काव करें।

स्प्रिंकलर तकनीक से ड्रैगन फ्रूट की खेती करने पर मिलेगी 80% फीसद छूट

भारत एक कृषि प्रधान देश है। भारत के 70% फीसद से ज्यादा लोग खेती किसानी से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से संलग्न हैं। देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के किसानों की मदद हेतु केन्द्र और राज्यों की सरकार हर संभव प्रयास करती हैं। इसको लेकर सरकार विभिन्न प्रकार की योजनाएं चलाती है। साथ ही, किसानों को अनुदान भी प्रदान किया जाता है। इसी कड़ी में सरकार ड्रैगन फ्रूट की खेती में सिंचाई के लिए स्प्रिंकलर तकनीक का इस्तेमाल करने वाले कृषकों को 80% फीसद तक का अनुदान दिया जा रहा है।

स्प्रिंकलर तकनीक से ड्रैगन फ्रूट की अच्छी उपज मिलेगी

भारत में ड्रैगन फ्रूट की खेती बड़ी ही तेजी से लोकप्रिय होती जा रही है। हालांकि, यह फल मुख्य रूप से थाईलैंड, इजरायल, वियतनाम और श्रीलंका जैसे देशों में काफी प्रसिद्ध है। लेकिन, वर्तमान में इसे भारत के लोगों द्वारा भी बेहद पसंद किया जा रहा है। यदि आप ड्रैगन फ्रूट की खेती करते हैं अथवा फिर करने की योजना बना रहे हैं, तो आप ड्रैगन फ्रूट की खेती में सिंचाई के लिए स्प्रिंकलर टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल अवश्य करें। ड्रैगन फ्रूट की खेती में इस तकनीक का उपयोग करने से आपके खेतों में फसल की उपज काफी बढ़ेगी। स्प्रिंकलर तकनीक का इस्तेमाल करने के लिए सरकार की ओर से 80% प्रतिशत तक का अनुदान दिया जाएगा।

ड्रैगन फ्रूट सेहत के लिए अत्यंत लाभकारी है

फल हमारे स्वास्थ के लिए अत्यंत लाभकारी होते हैं। ड्रैगन फ्रूट का सेवन करने से आपको विभिन्न प्रकार के स्वास्थ से संबंधित लाभ मिलते हैं। आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि ड्रैगन फ्रूट के अंदर भरपूर मात्रा में Vitamin C पाया जाता है। इसका सेवन करने से इम्यून सिस्टम भी बेहद मजबूत होता है। इसके अलावा ड्रैगन फ्रूट का सेवन करने से मधुमेह को काबू में रखा जा सकता है। साथ ही, आपको इससे कॉलेस्ट्रोल में भी अत्यंत लाभ मिल सकता है। ड्रैगन फ्रूट एक ऐसा फल है, जिसमें फैट और प्रोटीन की मात्रा बेहद कम पाई जाती है।

ड्रैगन फ्रूट की खेती के लिए कितनी सब्सिडी दी जा रही है

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि बिहार सरकार उद्यान निदेशालय ने किसानों के लिए एकीकृत बागवानी विकास मिशन योजना का शुभारंभ किया है। इस योजना के अंतर्गत ड्रैगन फ्रूट की खेती करने वाले कृषकों को सरकार की ओर से प्रति इकाई लागत (1.25 लाख रुपये प्रति हेक्टेयर) का 40% अनुदान दिया जाएगा। इस हिसाब से ड्रैगन फ्रूट की खेती करने वाले किसानों को अनुदान के तौर पर 40% प्रतिशत यानी 50 हजार रुपये मिलेंगे।

योजना का लाभ उठाने के लिए आवेदन यहां करें

यदि आप बिहार राज्य में रहते हैं और इस योजना का लाभ उठाना चाहते हैं, तो बिहार कृषि विभाग, उद्यान निदेशालय की ऑफिसियल वेबसाइट horticulture-bihar-gov-in पर आवेदन कर सकते हैं।

GOODYEAR

India's 1 Tyre Supplier to Tractor Manufacturers*

VAJRA SUPER PREMIUM

Premium Tyres For Premium Profits

Sizes Available:
13.6-28, 14.9-28, 16.9-28

GOODYEAR IN INDIA SINCE 1922

100 ANNIVERSARY

*Applicable for manufacturing defects only. For details terms & condition of warranty policy & other information pls. visit www.goodyear.co.in or Call Toll Free 1800-266-6767 or SMS GY56767

(* No.1 Original Equipment Manufacturer Tractor tyre supplier in india with highest Market Share% in 2019 &2020)

GOODYEAR

आम के बगीचे में फलों में लगने वाले रोगों से बचाव की महत्वपूर्ण सलाह

भा.कृ,अनु.प, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान (ICAR, Central Institute of Subtropical Horticulture) के द्वारा किसानों के लिए मार्च महीने में आम के बगीचे से जुड़ी 5 महत्वपूर्ण सलाह जारी की है। ताकि किसान वक्त रहते आम के बगीचे की देखरेख (Mango orchard maintenance) करके शानदार उपज हांसिल कर सकें। गर्मी के मौसम में बाजार के अंदर सबसे ज्यादा आम की मांग रहती है। इस दौरान किसान आम की खेती से ज्यादा आमदनी प्राप्त कर सकते हैं। परंतु, सामान्यतः देखा गया है, कि आम की फसल में कई बार कीट व रोग लगने से किसानों को बड़े नुकसान का सामना करना पड़ता है। अब ऐसी स्थिति में भारतीय मौसम विज्ञान विभाग ने कृषकों के लिए मार्च माह में आम के बगीचों से जुड़ी जरूरी सलाह जारी की है। जिससे किसान वक्त रहते आम के बगीचे से अच्छा मुनाफा प्राप्त कर सकें।

आम के बगीचे से शानदार फायदा पाने के लिए किसानों को मार्च माह में केवल 5 बातों का ध्यान रखना है, जोकि भा.कृ,अनु.प, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान रहमानखेड़ा, पो.काकोरी, लखनऊ के द्वारा जारी की गई है। ऐसे में आइए इन 5 महत्वपूर्ण सलाहों के बारे में विस्तार से जानते हैं।

खर्रा रोग की रोकथाम हेतु सलाह

विभाग के द्वारा जारी की गई जानकारी के मुताबिक, इस सप्ताह उत्तर प्रदेश में खर्रा रोग से क्षति की संभावना जताई गई है. अगर फसल में 10 प्रतिशत से अधिक पुष्पगुच्छों पर खर्रा की उपस्थिति देखी जाती है, तो टेबुकोनाजोल्ट्रा. इफ्लॉक्सीस्ट्रोबिन (0.05 प्रतिशत) या हेक्साकोनाजोल (0.1 प्रतिशत) या सल्फर (0.2 प्रतिशत) का छिड़काव किया जा सकता है.

आम के भुनगा कीट की रोकथाम के लिए सलाह

आम का भुनगा (फुदका या लस्सी) एक बेहद हानिकारक कीट है, जो आम की फसल को बड़ी गंभीर हानि पहुँचा सकता है। यह बौर, कलियों तथा मुलायम पत्तियों पर एक–एक करके अंडे देते हैं और शिशु अंडे से एक सप्ताह में बाहर आ जाते हैं। बाहर आने के पश्चात शिशु एवं वयस्क पुष्पगुच्छ (बौर), पत्तियों तथा फलों के मुलायम हिस्सों से रस को चूस लेते हैं। इससे वृक्ष पर बौर खत्म हो जाता है। इसकी वजह से फल बिना पके ही गिर जाते हैं। भारी मात्रा में भेदन तथा सतत रस चूसने की वजह से पत्तियां मुड़ जाती हैं और प्रभावित ऊतक सूख जाते हैं। यह एक मीठा चिपचिपा द्रव भी निकालते हैं, जिस पर सूटी मोल्ड (काली फफूंद) का वर्धन होता है। सूटी मोल्ड एक तरह की फफूंद होती है, जो पत्तियों में होने वाली प्रकाश संश्लेषण की क्रिया को कम करती है। अगर समय पर हस्तक्षेप नहीं किया गया, तो गुणवत्ता वाले फल की पैदावार प्रभावित होगी। अब ऐसी स्थिति में किसानों को सलाह दी जाती है, कि यदि पुष्पगुच्छ पर भुनगे की मौजूदगी देखी जा रही है, तो तत्काल इमिडाक्लोप्रिड (0.3 मि.ली. / ली. पानी) तथा साथ में स्टिकर (1 मि.ली. / ली. पानी) छिड़काव करना चाहिए।

पुष्प गुच्छ मिज की रोकथाम हेतु सलाह

आम के पुष्प एवं पुष्प गुच्छ मिज अत्यंत हानिकारक कीट हैं, जो आम की फसल को काफी प्रभावित करते हैं। मिज कीट का आक्रमण वैसे तो जनवरी महीने के आखिर से जुलाई माह तक कोमल प्ररोह तने एवं पत्तियों पर होता है। परंतु, सर्वाधिक नुकसान बौर एवं नन्हें फलों पर इसके द्वारा ही किया जाता है। इस कीट के लक्षण बोर के डंठल, पत्तियों की शिराओं अथवा तने पर कत्थई या काले धब्बे के रूप में दिखाई देते हैं। धब्बे के बीच भाग में छोटा सा छेद होता है।

प्रभावित बौर व पत्तियों की आकृति टेढ़ी–मेढ़ी हो जाती है। प्रभावित इलाकों से आगे का बौर सूख भी सकता है। किसान भाइयों को सलाह दी जाती है, कि इस कीट की रोकथाम हेतु जरूरत के अनुसार डायमेथोएट (30 प्रतिशत सक्रिय तत्व) 2.0 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से स्टिकर (1.मि.ली / ली.पानी) के साथ छिड़काव करें।

आम के बगीचे में थ्रिप्स की रोकथाम हेतु सलाह

दरअसल, आने वाले कुछ दिनों के दौरान आम के बौर पर थ्रिप्स का संक्रमण दर्ज किया जा सकता है। अगर आम के बगीचों में इसका संक्रमण देखा जाता है, तो थायामेथोक्साम (0.33 ग्राम / लीटर) के छिड़काव द्वारा तुरंत इसको प्रबंधित करें।

आम के गुजिया कीट की रोकथाम हेतु सलाह

आम के बागों में गुजिया कीट की गतिविधि जनवरी महीने के पहले सप्ताह से शुरू हो जाती है। यदि बचाव के उपाय असफल होते हुए कीट बौर और पत्तियों तक पहुंच गया है, तो किसानों से अनुरोध है कि इसके प्रबंधन हेतु आवश्यक कार्यवाही शीघ्र करें। अगर कीट बौर और पत्तियों तक पहुंच गया हो तो कार्बो. सल्फान 25 ई.सी का 2 मिली. / ली.पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

पपीते की खेती को प्रोत्साहन दे रही बिहार सरकार

किसान भाई पपीते की खेती कर तगड़ा मुनाफा हांसिल कर सकते हैं। बिहार में सरकार की तरफ से भारी अनुदान दिया जा रहा है। भारत के अंदर पपीते की खेती काफी बड़े स्तर पर की जाती है। पपीता एक ऐसा फल है, जो ना सिर्फ स्वादिष्ट होता है, बल्कि लोगों की सेहत के लिए भी बेहद फायदेमंद होता है। बिहार सरकार की तरफ से एकीकृत बागवानी विकास मिशन योजना के अंतर्गत पपीते की खेती करने के लिए कृषकों को अनुदान प्रदान कर रही है।

अगर आप एक किसान हैं, बिहार में आपके पास जमीन है तो आप पपीते की खेती शुरू कर सकते हैं और शानदार कमाई कर सकते हैं।बिहार सरकार ने पपीते की खेती करने के लिए इकाई लागत 60 हजार रुपये प्रति हेक्टेयर निर्धारित की गई है। बतादें, कि इस पर सरकार की तरफ से किसानों को अनुदान भी दिया जाएगा।

पपीते की खेती करने पर सरकार की तरफ से किसान भाइयों को 75 प्रतिशत मतलब की 45 हजार रुपये सब्सिडी के तौर पर मिलेंगे। इसका अर्थ यह है, कि किसानों को पपीते की खेती करने के लिए केवल 15 हजार रुपये ही खर्च करने पड़ेंगे।

किसानों को काफी अच्छा मुनाफा हांसिल होगा

विशेषज्ञों की मानें तो पपीते की खेती करने वाले कृषकों के लिए लाभ ही लाभ है। एक एकड़ भूमि में लगभग 1 हजार के आसपास पौधे रोपे जा सकते हैं। इनसे 50 हजार से लेकर 75 हजार किलो के बीच पपीते का उत्पादन होगा। पपीता बाजार में काफी शानदार कीमतों पर बिकता है। इसकी मांग साल भर बनी रहती है, जिससे आपको तगड़ा मुनाफा हो सकता है। पपीते के पौधे की नियमित रूप से सिंचाई करने की आवश्यकता होती है। साथ ही, रोग एवं कीटों से सुरक्षा करने के लिए आवश्यक प्रबंधन करना भी जरूरी है। पपीते के पौधे 8–12 महीने के अंदर फल देने लगते हैं। फल को पकने पर तोड़कर बाजार में बेचा जा सकता है।

किसान भाई यहां अप्लाई कर सकते हैं

अगर आप बिहार राज्य के किसान हैं और पपीते की खेती करने में अपनी रूचि रखते हैं तो ये योजना आपके लिए बेहद शानदार रहेगी। योजना का फायदा उठाने के लिए किसान भाई आधिकारिक साइट horticulture-bihar-gov-in पर जाकर आवेदन कर सकते हैं। साथ ही, किसान योजना से संबंधित ज्यादा जानकारी के लिए पास के उद्यान विभाग के कार्यालय पर संपर्क साध सकते हैं। यदि आप भी बेहतरीन मुनाफा अर्जित करना चाहते हैं, तो आज ही पपीते की खेती कर अपना व्यवसाय शुरू कर दें।

सूरजमुखी की इन प्रमुख किस्मों की खेती से मिलेगी शानदार उपज और मोटा मुनाफा

सूरजमुखी एक सदाबहार फसल है, इसकी खेती रबी, जायद और खरीफ के तीनों सीजन में की जा सकती है। बतादें, कि सूरजमुखी की खेती के लिए सबसे अच्छा समय मार्च के माह को माना जाता है। इस फसल को कृषकों के बीच नकदी फसल के रूप में भी पहचाना जाता है। सूरजमुखी की खेती से किसान कम लागत में ज्यादा मुनाफा अर्जित कर सकते हैं। इसके बीजों से 90–100 दिनों के समयांतराल में 45 से 50% तक तेल हांसिल किया जा सकता है। सूरजमुखी की फसल को शानदार विकास देने के लिए 3 से 4 बार सिंचाई की जाती है, ताकि इसके पौधे सही तरीके से पनप सकें। अगर हम इसकी टॉप 5 उन्नत किस्मों की बात करें, तो इसमें एमएसएफएस 8, केवीएसएच 1, एसएच 3322, ज्वालामुखी और एमएसएफएच 4 आती हैं।

1. सूरजमुखी की एमएसएफएस–8 (MSFS-8) किस्म

सूरजमुखी की उन्नत किस्मों में एमएसएफएस–8 भी शम्मिलित है। इस किस्म के सूरजमुखी के पौधे की ऊंचाई तकरीबन 170 से 200 सेमी तक रहती है। एमएसएफएस–8 सूरजमुखी के बीज में 42 से 44% तक तेल की मात्रा पाई जाती है। किसान को सूरजमुखी की इस फसल को तैयार करने में 90 से 100 दिनों का वक्त लगता है। MSFS-8 किस्म की सूरजमुखी फसल की यदि एकड़ भूमि पर खेती की जाती है, जो इससे लगभग 6 से 7.2 क्विंटल तक उपज मिलती है।

2. सूरजमुखी की केवीएसएच–1 (KVSH-1) किस्म

केवीएसएच–1 सूरजमुखी की उन्नत किस्मों में शम्मिलित है, जो कि शानदार उत्पादन देती है। सूरजमुखी के इस किस्म वाले पौधे की ऊंचाई तकरीबन 150 से 180 सेमी तक होती है। केवीएसएच–1 सूरजमुखी के बीज से लगभग 43 से 45% तक तेल प्राप्त होता है। किसान को सूरजमुखी की इस उन्नत किस्म को विकसित करने में 90 से 95 दिनों की समयावधि लगती है। अगर केवीएसएच–1 सूरजमुखी की फसल को एकड़ भूमि पर लगाया जाए, तो इससे तकरीबन 12 से 14 क्विंटल तक उत्पादन हो सकता है।

3. सूरजमुखी की एसएच–3322 (SH-3322) किस्म

सूरजमुखी की शानदार उपज देने वाली किस्मों में एसएच–3322 भी शुमार है। इस सूरजमुखी की उन्नत किस्म के पौधों की ऊंचाई तकरीबन 137 से 175 सेमी तक पाई जाती है। एसएच–3322 सूरजमुखी के बीज से लगभग 40–42% फीसद तक तेल की मात्रा हांसिल होती है। किसान को एसएच–3322 किस्म की सूरजमुखी फसल को विकसित करने में 90 से 95 दिनों का वक्त लग जाता है। सूरजमुखी की एसएच–3322 किस्म को अगर एक एकड़ जमीन पर उगाया जाए, तो इससे तकरीबन 11.2 से 12 क्विंटल तक की उपज हांसिल हो सकती है।

4. सूरजमुखी की ज्वालामुखी (Jwalamukhi) किस्म

सूरजमुखी की ज्वालामुखी किस्म के बीजों में 42 से 44% प्रतिशत तक तेल पाया जाता है। किसान को इसकी फसल तैयार करने में 85 से 90 दिनों का वक्त लगता है। ज्वालामुखी पौधे की ऊंचाई तकरीबन 170 सेमी तक रहती है। सूरजमुखी की इस किस्म को एक एकड़ भूमि पर लगाने से लगभग 12 से 14 क्विंटल तक पैदावार हो जाती है।

5. सूरजमुखी की एमएसएफएच–4 (MSFH-4) किस्म

सूरजमुखी की इस एमएसएफएच–4 किस्म की खेती रबी और जायद के सीजन में की जाती है। इस फसल के पौधे की ऊंचाई तकरीबन 150 सेमी तक पाई जाती है। एमएसएफएच–4 सूरजमुखी के बीजों में तकरीबन 42 से 44% तक तेल की मात्रा विघमान रहती है। इस किस्म की फसल को तैयार करने में किसान को 90 से 95 दिनों का वक्त लग जाता है। अगर किसान इस किस्म की फसल को एक एकड़ खेत में लगाते हैं, तो इससे करीब 8 से 12 क्विंटल तक की उपज बड़ी आसानी से प्राप्त हो जाती है।

खुशखबरी: मिनी ट्रैक्टर और सहायक उपकरणों की खरीद पर 90% प्रतिशत अनुदान

भारत एक कृषि प्रधान देश है। इसकी तकरीबन 70% प्रतिशत से ज्यादा अबादी खेती पर निर्भर है। अब ऐसी स्थिति में किसानों की सहायता के लिए केन्द्र और राज्यों की सरकार नई–नई योजनाऐं चलाती रहती हैं, जिसमें किसानों को अनुदान भी दिया जाता है। इसी कड़ी में छोटे एवं सीमांत किसानों के लिए एक योजना जारी की गई है।

इस योजना के अंतर्गत किसान खेती को सरल बनाने के लिए सिर्फ 35 हजार रुपये में मिनी ट्रैक्टर और कृषि उपकरणों की खरीद कर सकते हैं। बतादें, कि इस योजना में कमजोर वर्ग के किसान भाइयों को प्राथमिक. ता दी जाएगी। आशा है, कि शीघ्र ही इस योजना को शुरू किया जा सकता है। साथ ही, इसका लाभ लेने के लिए किसान भाइयों को ऑनलाइन आवेदन करना पड़ेगा।

जानिए कौन से किसानों को मिलेगा योजना का लाभ

महाराष्ट्र सरकार ने लघु और सीमांत किसानों को ट्रैक्टर का स्वामी बनाने की योजना प्रारंभ की है। इस योजना के अंतर्गत छोटी खेती करने वाले किसान भाइयों को ट्रैक्टर व सहायक कृषि उपकरण पर 90% प्रतिशत अनुदान दिया जाएगा। ट्रैक्टर या कृषि उपकरण खरीदने के लिए कृषकों को सिर्फ 35 हजार रुपये खर्च करने पड़ेंगे। वहीं, अन्य शेष धनराशि महाराष्ट्र सरकार द्वारा प्रदान की जाएगी। सरकार इस मिनी ट्रैक्टर योजना के साथ कृषकों की आर्थिक स्थिति को सुधारने में जुटी है।

जानिए सरकार किन उपकरणों पर सब्सिड़ी प्रदान कर रही है

समाज कल्याण विभाग महाराष्ट्र द्वारा इस योजना को जारी किया गया है। मिनी ट्रैक्टर योजना के अंतर्गत राज्य में अनुसूचित जाति और नव–बौद्ध समूहों से संबंधित किसान परिवारों को 90% प्रतिशत सब्सिडी पर छोटे ट्रैक्टर व सहायक कृषि उपकरण उपलब्ध कराए जाएंगे। बतादें, कि महाराष्ट्र सरकार की ओर से 3 लाख 15 हजार रुपये की वित्तीय मदद प्रदान की जाएगी। किसान को सिर्फ 10% प्रतिशत धनराशि का ही भुगतान करना होगा, जो कि मात्र 35 हजार रुपए होगी। पात्रता प्राप्त करने वाले किसानों को कल्टीवेटर, रोटावेटर, ट्रेलर और मिनी ट्रैक्टर पर अनुदान दिया जाएगा।

मिनी ट्रैक्टर योजना के लिए आवश्यक दस्तावेज

किसानों का मिनी ट्रैक्टर व सहायक कृषि उपकरणों पर सब्सिडी प्राप्त करने के लिए मोबाइल नंबर, वोटर आईडी, आधार कार्ड, पासपोर्ट साइज फोटो, बैंक पासबुक की फोटो कॉपी, समूह सदस्यों का प्रमाणपत्र, जाति प्रमाण पत्र, निवास प्रमाण पत्र जैसे दस्तावेज का होना अत्यंत आवश्यक है।

मिनी ट्रैक्टर सब्सिडी योजना का लाभ लेने हेतु आवेदन प्रक्रिया

योजना की पात्रता पूरी करने वाले किसान मिनी ट्रैक्टर व सहायक कृषि उपकरण पर अनुदान प्राप्त करने के लिए https://mini-mahasamajkalyan-in वेबसाइट पर आवेदन कर सकते हैं। इसके अलावा योजना से संबंधित विस्तृत जानकारी के लिए आप https://sjsa-maharashtra-gov-in/mr वेबसाइट पर विजिट कर सकते हैं। आवेदन करने वाले किसान सहयोग पाने के लिए अपने संबंधित जनपदों में सहायक समाज कल्याण आयुक्त से भी संपर्क साध सकते हैं।

न्यू हॉलैंड कंपनी ने तुर्की के कोन्या कृषि मेले में अपने नए टी3 इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर को लॉन्च किया

न्यू हॉलैंड कंपनी ने वर्तमान में तुर्की के कोन्या कृषि मेले में अपने नवीनतम इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर को लॉन्च किया है। कंपनी ने यहां अपने टी3 इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर को प्रस्तुत किया है।

इस 100% प्रतिशत इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर को अत्याधुनिक खेती के लिए विकसित किया गया है। विश्वभर में अपने शानदार कृषि उपकरणों के लिए जानी जाने वाली न्यू हॉलैंड कंपनी ने हाल ही में तुर्की के कोन्या कृषि मेले में अपने नवीनतम इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर को लांच किया है। कंपनी ने यहां अपने टी3 इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर को प्रस्तुत किया है। इस 100% इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर को अत्याधुनिक खेती के लिए विकसित किया गया है। कंपनी ने अपने इस ट्रैक्टर को 5 मार्च, 2024 को प्रस्तुत किया है। यह कोई सामान्य ट्रैक्टर नहीं है – इसे कंपनी ने कॉम्पैक्ट साइज में प्रस्तुत किया है और इसको पूर्णतय बिजली से संचलित रखा गया है।

जानें इसमें कितना kWh का बैटरी पैक दिया गया है

न्यू हॉलैंड के इस नए इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर में 75 kWh बैटरी पैक दिया गया है, जो शक्तिशाली इलेक्ट्रिक मोटर को संचालित करने के लिए 800 वोल्ट के उच्च वोल्टेज के साथ आता है। इस इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर की एक मोटर पहियों को चलाती है। वहीं, इसकी दूसरी मोटर हाइड्रोलिक्स और पावर टेक–ऑफ को पावर देती है। इस आकार के ट्रैक्टर में 75 किलोवाट पावर वाली व्हील मोटर प्रदान की गई है, जो इसको अत्यंत प्रभावशाली ट्रैक्टर बनाती है।

न्यू हॉलैंड टी3 इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर में श्रोबोटिकश ट्रांसमिशन प्रदान किया गया है

इस न्यू हॉलैंड टी3 इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर में 'रोबोटिक ' ट्रांसमिशन दिया गया है। जो कि ट्रैक्टर में इलेक्ट्रॉनिक रूप से गियर बदलता है और सुचारू संचालन सुनिश्चित करता है। इसके इलेक्ट्रिक ड्राइव की सहायता से अधिकतम टॉर्क केवल 1 km/h से उपलब्ध हो जाती है। यदि आपको काम तेजी से करना है, तो वैकल्पिक 40 km/h स्पीड मोड भी कंपनी ने दिया है।

यह ट्रैक्टर 2 और 4 व्हील ड्राइव में भी उपलब्ध है

न्यू हॉलैंड ने अपने इस इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर को काफी आकर्षक बॉडी और शानदार फीचर्स के साथ तैयार किया है। कंपनी के इस नए T3 इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर को शुरू में टू व्हील ड्राइव मॉडल के रूप में पेश किया गया है। न्यू हॉलैंड ने एक विकल्प के तोर पर इस इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर में फोर–व्हील ड्राइव भी दिया है।

तुर्क ट्रैक्टर द्वारा यह ट्रैक्टर निर्मित किया गया है

न्यू हॉलैंड ने अपने इस टी3 इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर को कंपनी के स्वामित्व वाली तुर्की निर्माता कंपनी तुर्क ट्रैक्टर द्वारा प्रस्तुत किया है। आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि तुर्क ट्रैक्टर न्यू हॉलैंड और केस IH ब्रांड्स के लिए ट्रैक्टरों का निर्माण करता है।

रोटावेटर की खरीदी पर किसानों को मिलेगी सब्सिडी

सरकार किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार करने के लिए कृषि यंत्र सुधार करने के लिए अनुदान योजना चलाई है। सरकार द्वारा किसानों को सस्ती दर पर कृषि यंत्र प्रदान की जा रही है। विभिन्न राज्यों में इस योजना को अलग–अलग नामों से चलाया जाता है।

कृषि यंत्र अनुदान योजना राजस्थान (Krishi Yantra Anudan Yojana Rajasthan), कृषि यंत्रीकरण योजना उत्तर प्रदेश (Agricultural Mechanization Scheme) और ई–कृषि यंत्र अनुदान योजना मध्यप्रदेश (E&Krishi Yantra Anudan Yojana) चल रही हैं। किसानों को इन योजनाओं के तहत राज्य अपने स्तर पर कृषि उपकरणों की खरीद पर सब्सिडी का लाभ देते हैं।

रोटावेटर का क्या कार्य होता है?

रोटावेटर का इस्तेमाल खेत को जोतने के लिए किया जाता है। रोटावेटर से जुताई करते ही जमीन भुरभुरी हो जाती है। इसकी सहायता से फसलों को मिट्टी में मिलाना बहुत आसान होता है। रोटावेटर के प्रयोग से खेत की मिट्टी उपजाऊ बनती है।

रोटावेटर पर किसानों को कितनी सब्सिडी मिलेगी

किसानों को राज्य सरकार से रोटावेटर खरीदने पर 40 से 50 प्रतिशत तक की सब्सिडी दी जाती है। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, लघु और सीमांत किसानों और महिलाओं को कृषि यंत्र अनुदान योजना के तहत 20 बीएचपी से अधिक क्षमता वाले रोटावेटर की कीमत का 50 प्रतिशत, या 42,000 से 50,400 रुपए तक की सब्सिडी दी जाएगी। साथ ही, अन्य श्रेणी के किसानों को रोटावेटर की लागत पर 40 प्रतिशत सब्सिडी दी जाएगी, जो 34,000 से 40,300 रुपये तक हो सकती है।

रोटावेटर कितनी कीमत तक मिल जाता है?

कई कंपनिया रोटावेटर का निर्माण करती है साथ ही इनकी कीमत भी किसानों के बजट के आधार पर निध. ारित करती है। रोटावेटर की कीमत लगभग 50,000 रुपए से शुरू होकर 2 लाख रुपए तक है। रोटावेटर की कीमत इसके फीचर्स और स्पेसिफिकेशन के आधार पर निर्धारित की जाती है।

रोटावेटर की खरीदी के लिए पात्रता और शर्तें

- आवेदक के पास स्वयं के नाम से कृषि भूमि होनी चाहिए या अविभाजित परिवार में राजस्व रिकार्ड में नाम होना चाहिए।
- ट्रैक्टर चलित कृषि यंत्र के लिए सब्सिडी का लाभ प्राप्त करने के लिए ट्रैक्टर का रजिस्ट्रेशन आवेदक के नाम से होना चाहिए।
- विभाग की किसी भी योजना में किसी भी प्रकार का कृषि यंत्र एक किसान को तीन वर्ष की अवधि में केवल एक बार दिया जाएगा।
- एक वित्तीय वर्ष में एक किसान को सभी योजनाओं में अलग–अलग प्रकार के तीन कृषि यंत्रों पर अनुदान दिया जाएगा।
- राज किसान साथी पोर्टल पर सूचीबद्ध किसी भी पंजीकृत निर्माता या विक्रेता से कृषि यंत्र खरीदने पर ही अनुदान दिया जाएगा।

रोटावेटर की खरीद पर सब्सिडी लेने के लिए आवेदन प्रिक्रिया

इस योजना का लाभ प्राप्त करने के लिए आपको राजकिसान पोर्टल पर आवेदन करना होगा जिससे की आपको समय पर योजना का लाभ प्राप्त हो सके। पोर्टल पर प्राप्त आवेदनों का रैंडमाइजेशन के बाद ऑनलाइन वरीयता क्रम के आधार पर निस्तारण किया जाएगा।

जो किसान स्वयं आवेदन करना चाहते हैं, वे राजकिसान पोर्टल पर जाकर आवेदन कर सकते हैं। यदि स्वयं आवेदन नहीं कर सकते हैं तो आप अपने नजदीकी ई–मित्र केंद्र पर जाकर आवेदन कर सकते हैं। आप आवेदन पत्र ऑनलाइन जमा किए जाने की प्राप्ति रसीद ऑनलाइन ही प्राप्त कर सकते हैं।

आवेदन के लिए आवश्यक दस्तावेज

आवेदन करते समय आपके पास आधार कार्ड, जनाधार कार्ड, जमाबंदी की नकल (जो छह माह से अधिक पुरानी नहीं होनी चाहिए), जाति प्रमाण पत्र, ट्रैक्टर का पंजीयन प्रमाण–पत्र (आर.सी.) की प्रति (ट्रैक्टर चलित यंत्रों के लिए अनिवार्य) की आवश्यकता होगी। राज्य के किसानों कृषि कार्यालय से प्रशासनिक स्वीकृति मिलने के बाद ही कृषि यंत्रों की खरीदी कर सकेंगे। किसान को मोबाइल संदेश या उनके क्षेत्र के कृषि पर्यवेक्षक से स्वीकृति की जानकारी दी जाएगी। कृषि उपकरण या मशीन की खरीद के बाद कृषि पर्यवेक्षक या सहायक कृषि अधिकारी द्वारा भौतिक जांच की जाएगी। सत्यापन के समय कृषि यंत्र की खरीद का बिल देना होगा। तब ही अनुदान का भुगतान किसान के बैंक खाते में डिजिटल रूप से किया जाएगा।

सेल्स रिपोर्ट 2024 सोनालिका ने रिकॉर्ड ट्रैक्टर बिक्री दर्ज की है

विदेशों को सबसे ज्यादा एक्सपोर्ट होने वाला ट्रैक्टर ब्रांड' सोनालिका ट्रैक्टर्स भारत से एक्सपोर्ट किया जाने वाला नं. 1 ट्रैक्टर ब्रांड है।

यह देश का तीसरा सबसे बड़ा ट्रैक्टर निर्माता होने के साथ–साथ, विश्व भर के शीर्ष 5 ट्रैक्टर निर्माताओं के बीच गर्व से खड़ा है। 1996 में अपने मूल क्छ। में किसान केन्द्रित होने के साथ, यह कंपनी कस्टमाइज्ड ट्रैक्टर्स और उपकरणों का निर्माण करती है। कंपनी किसानों की कृषि हेतु केंद्रित आवश्यकताओं के अनुसार ट्रैक्टर्स और उपकरणों को विकसित किया जाता है।

सोनालिका ने रिकॉर्ड ट्रैक्टर बिक्री की है

सोनालिका ट्रैक्टर्स ने फरवरी में अपनी अब तक की सबसे अधिक रिकॉर्ड ट्रैक्टर की बिक्री दर्ज की हैं। सोनालिका ने फरवरी 2024 के दौरान घरेलू और निर्यात बाजार में कुल 9,722 ट्रैक्टर बेचे हैं, जो वित्त वर्ष 2023 में 9,154 ट्रैक्टर बिक्री से 6.2% अधिक है। इतनी अच्छी बिक्री के साथ, सोनालिका कुल ट्रैक्टर बाजार में 16.1% हिस्सेदारी दर्ज करने में कामयाब रही, जो अब तक की फरवरी के महीने की सोनालिका की सबसे अधिक बाजार हिस्सेदारी है। प्रत्येक ट्रैक्टर सेगमेंट में अग्रणी सोनालिका ने हाल ही में 40–75 एचपी रेंज में 10 नए मॉडल के साथ अपनी प्रसिद्ध और प्रीमियम 'टाइगर ट्रैक्टर श्रृंखला' का विस्तार किया है।

संयुक्त प्रबंध निदेशक रमन मित्तल ने क्या कहा जानें

इंटरनेशनल ट्रैक्टर्स लिमिटेड के संयुक्त प्रबंध निदेशक रमन मित्तल ने कहा, "हमें ट्रैक्टरों के लिए गतिशील भारतीय कृषि पारिस्थितिकी तंत्र की जरूरतों को पूरा करने और उद्योग में उच्चतम बाजार हिस्सेदारी हासिल करने के साथ–साथ फरवरी में 16.1% की अपनी उच्चतम बाजार हिस्सेदारी हासिल करने में खुशी महसूस हो रही है। पूरे महीने अपनी सकारात्मक गति बनाए रखते हुए, हमने फरवरी 2024 में 9,722 ट्रैक्टरों की कुल बिक्री दर्ज की है और उद्योग के प्रदर्शन को भी पीछे छोड़ दिया है। हमारी व्यापक हेवी–ड्यूटी ट्रैक्टर रेंज को हाल ही में 10 नए टाइगर ट्रैक्टर मॉडल के साथ अपग्रेड किया गया है, जिसे किसानों द्वारा अत्यधिक सराहा और स्वीकार किया जा रहा है क्योंकि यह इंजन, ट्रांसमिशन और हाइड्रोलिक्स में कई नई बेहतर तकनीकें प्रदान करता है।"

NEW HOLLAND

HAR KAAM MEIN Plus+

Power+ Savings+ Safety+

ROPS with Fiber Canopy

Optimal design ensures safety of tractor

3630 SUPER Plus

6 years T-warranty

भंडारण करते वक्त अनाज में लगने वाले कीट और उनकी रोकथाम

फसल की कटाई के बाद सबसे महत्वपूर्ण कार्य फसल भंडारण का है। किसान वैज्ञानिक विधि का उपयोग कर फसल को संरक्षित कर सकते है। ज्यादातर फसल में लगने वाले मुख्य कीटों का कारण नमी का होना है। अनाज के भंडारण में लगने वाले मुख्य कीट लेपिडोप्टेरा और कोलिओप्टेरा आर्डर के होते है।

1 सुरसुरी

यह कीट भूरे काले रंग का होता है। इसके सूंड़ के आकर का सिर आगे की ओर झुका हुआ होता है। सुरसुरी कीट की लम्बाई 2 –4 मिमी होती है। सुरसुरी के पंखो के ऊपर हल्के धब्बेनुमा की रचना होती है। अनाज के भण्डारण को प्रोढ़ और सूंडी दोनों ही क्षति पहुँचाती है। यह सूंडी सामान्यता अनाज को अंदर से खाकर खोखला बना देती है।

2 खपड़ा बीटल

यह प्रोढ़ कीट स्लेटी भूरे रंग का होता है। इस कीट का शरीर अंडाकार का होता है, सिर छोटा और सिकुड़ने वाला होता है। यह सूंडी बारीक रोएं से भरपूर होती है। खपड़ा बीटल कीट की लंबाई 2 –2.5 मिमी होता है। इस कीट को आसानी से फसल में पहचाना जा सकता है। सूंडी का प्रकोप ज्यादातर अनाज के भ्रूड़ पर देखा जाता है।

3 अनाज का छोटा बेधक

यह कीट अनाज को खाकर अंदर से खोखला बना देता है। इस कीट की लंबाई 3 मिमी होती है, और यह कीट दिखने में गहरे भूरे रंग के होते है। प्रोढ़ और कीट दोनों ही फसल को क्षति पहुँचाते है, यह कीट उड़ने में भी सक्षम होती है। यह कीट अनाज को अंदर से खोखला करके आटे में परिवर्तित कर देते है। यह भंडारगृह का नाशीकीट है।

4 अनाज का पतंगा

यह कीट 5 –7 मिमी लम्बे होते है। यह कीट सुनहरे भूरे रंग के उड़ने वाले पतंगे रहते है। इस पतंगे का आखिरी सिरा नुकीला और बालयुक्त होता है। इस कीट के आगे वाले पंख हल्के पीले और पिछले वाले पंख भूरे रंग के होते है। यह कीट दाने के भीतर छिद्र करके अनाज को खाती है, और विकसित होकर प्रोढ़ के रूप में बहार निकलती है।

5 आटे का लाल भृंग

यह कीट ज्यादातर अनाज, आटा और संसाधित अनाज का कीट है। यह कीट लाल भूरे रंग का होता है और यह लगभग 3 मिमी लंबा होता है। यह कीट चलने और उड़ने में काफी तेज होते है। इस कीट के वक्ष, सिर और उदर स्पष्ट होते है। इसके ऐंटीनी झुके हुए होते है और ऐंटीनी के ऊपर तीन खंड मिलकर एक मोटा भाग विकसित करते है।

6 दालों का भृंग

प्रोढ़ कीट का शरीर भूरे रंग का होता है। यह प्रोढ़ कीट लगभग 3.2 मिमी लंबा होता है। प्रोढ़ कीट का शरीर आगे की ओर नुकीला और पीछे से चौड़ा होता है। यह सूंडी अनाज के दानों में छिद्र करके उन्हें खा जाती है।

7 कटारी दाँतो वाला अनाज का भृंग

यह कीट लगभग 1ध8 इंच लम्बे होते है। इस कीट के धड़के दोनों किनारों पर आरीनुमा 6 दांत होते हैं। यह कीट आसानी से पहचाना जा सकता है। यह गाढ़े भूरे रंग के चपटे कीट होते हैं।

कीट प्रकोप के पूर्व प्रबंधन

- गोदामों में अनाज का भण्डारण करने से पहले, गोदामों की अच्छे से सफाई कर ले।
- भंडारित किये जाने वाले अनाज को अच्छे से धूप में सूखा ले, याद रहे अनाज में नमी न हो। अनाज का भण्डारण करने से पहले, अनाज की नमी की जांच कर ले।
- अनाज ढोने वाले वाहनों की साफ सफाई पर विशेष रूप से ध्यान दे।
- अनाज का भण्डारण करते वक्त पुरानी बोरियों का उपयोग न करें, उसकी जगह पर नई बोरियों का उपयोग करें। या फिर पुरानी बोरियों को 0.01 त्न साइपरमेथ्रिन 25 ईसी को पानी में मिलाकर बोरियों को आधा घंटे तक उसमे भिगों दें। बोरियों को छाया में सुखाने के बाद तब उसमे फसल का भण्डारण करें।
- अनाज से भरी बोरियों को सीधे निचे भूमि पर न रखे। बोरियों को हमेशा दीवार से सटा कर रखें।
- अनाज को गोदामों में कीट रहित करने के लिए 0.5 त्न मैलाथियान 50 ईसी को पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
- भंडारित अनाज को सुरक्षित रखने के लिए कपूर, सरसो के तेल और नीम की पत्तियों के पाउडर का उपयोग भी किया जा सकता हैं।

कीट प्रकोप के पश्चात उपाय

ज्यादा नमी वाले दिनों में 15 –20 दिन के अंतराल पर फसल में कीट प्रकोप की जाँच करते रहे। या फिर समय समय अनाज को धुप दिखाकर उसमे से नमी को भी दूर कर सकते हैं। एल्यूमिनियम फॉस्फाइड की एक गोली को एक टन अनाज में डालें और कुछ दिनों के लिए हवाबंद कर दें। ध्यान रहें, हवा अवरोधी भंडारों में इस गोली का उपयोग करें।

ओलावृष्टि से पीड़ित किसानों को मुफ्त बिजली और मुआवजा देगी योगी सरकार

किसानों की जिंदगी में बहुत सारे उतार चढ़ाव आते हैं। फिर भी किसान देश का पेट भरने के लिए हर कष्ट को सहते हुए अन्न पैदा करता है। उत्तर प्रदेश में इस बार बेमौसमी बारिश एवं ओलावृष्टि कृषकों पर कहर बनकर टूटी है।

किसान भाइयों की खेतों में कटाई के लिए खड़ी फसल पूरी तरह बर्बाद हो गई है। कृषकों को ओलावृष्टि के चलते क्षति से सहूलियत दिलाने के लिए प्रदेश की योगी सरकार ने बड़ा ऐलान किया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बारिश और ओलावृष्टि से प्रभावित कृषकों के लिए 23 करोड़ रुपये का मुआवजा जारी करने का फैसला लिया है।किसानों को राहत देते हुए सरकार ने एडवांस में मुआवजे की इस धनराशि को स्वीकृति किया गया है। मंगलवार (5 मार्च, 2024) को प्रदेश की राजधानी लखनऊ में हुई केबिनेट बैठक में किसानों के लिए ऐसे ही कई और महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। सरकार के इस फैसले से उन किसानों को बड़ी राहत मिलेगी, जिसकी पूरे साल की मेहनत चौपट हो गई है और वे अब नई फसल बुवाई की तैयारी कर रहे हैं।

किसानों को मुफ्त बिजली देने की घोषणा

कैबिनेट बैठक में मुआवजे के साथ–साथ किसानों को मुफ्त बिजली देने जैसे फैसलों पर मुहर लगाई गई। किसानों को मुफ्त बिजली प्रदान करने के संबंध में भी आदेश जारी किए गए हैं। यह निर्णय योगी सरकार की ओर से किसानों के लिए एक बड़ा तोहफा है। किसानों के पक्ष में यह निर्णय लेकर राज्य सरकार ने बीजेपी के 2022 के संकल्प पत्र का एक और वादा पूरा किया है।

इन जिलों के किसानों को मुआवजा मिलेगा

योगी सरकार ने जिस मुआवजे की घोषणा की है, उसका फायदा प्रदेश के 9 जनपदों के किसानों को मिलेगा। इनमें चित्रकूट, जालौन, झांसी, ललितपुर, महोबा, सहारनपुर, शामली, बांदा और बस्ती शामिल हैं। सरकार ने इन 9 जनपदों के किसानों के लिए एडवांस में मुआवजे के रूप में 23 करोड़ की धनराशि जारी की है। क्योंकि, इन जनपदों में बेमौसमी बारिश एवं ओलावृष्टि से फसलों को प्रचंड हानि हुई है। सरकार ने बांदा के लिए 2 करोड़, बस्ती के लिए 2 करोड़, चित्रकूट के लिए 1 करोड़, जालौन के लिए 5 करोड़, झांसी के लिए 2 करोड़, ललितपुर के लिए 3 करोड़, महोबा के लिए 3 करोड़, सहा. रनपुर के लिए 3 करोड़ और शामली के लिए 2 करोड़ रुपये की धनराशि मंजूर की है।

राज्य के अन्य हिस्सों का भी सर्वे करा रही सरकार

बतादें, कि विगत एक सप्ताह के दौरान उत्तर प्रदेश के विभिन्न हिस्सों में हो रही बारिश और हाल की वृष्टि के कारण एकतरफ तापमान में काफी कमी आ गई। साथ ही, दूसरी तरफ इसका प्रभाव सीधे फसलों पर पड़ा है। बीते दिनों भी तेज हवाओं और बारिश से गेहूं, सरसों, चने, आलू सहित विभिन्न फसलों को भारी नुकसान पहुंचा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी अधिकारियों को फसलों की हानि पर सर्वेक्षण करने के निर्देश जारी किए हैं।

जानिए 'किसानमार्ट' पोर्टल के बारे में जो किसानों की आय दोगुनी करेगा ?

भारत के अंदर किसान अपनी फसलों के मिलने वाले भाव को लेकर हमेशा चिंतित रहते हैं। परंतु, अब ऐसा नहीं होगा। किसानों को उनकी फसलों को सही भाव भी मिलेगा और लोगों तक किसानों के उत्पाद भी बड़ी सुगमता से पहुंच सकेंगे। इसके लिए केंद्र सरकार एक नवीन कवायद शुरू करने जा रही है। दरअसल, किसानों और कृषि–उद्यमियों को ग्राहकों से प्रत्यक्ष तौर पर जोड़ने और डायरेक्ट अपने उत्पाद की बिक्री करने में सहायता करने के लिए केंद्र सरकार एक ई–कॉमर्स पोर्टल लाने जा रही है।

इससे देश में कृषि उत्पादन को बेचने की प्रक्रिया को डिजिटल जरिए से और सहज बनाया जा सके। इस पोर्टल को 'किसानमार्ट' (What is Kisanmart portal) नाम दिया गया है।

बेंगलुरु मौजूद भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान (एटीएआरआई) द्वारा यह पोर्टल तैयार किया जा रहा है। मीडिया खबरों की मानें तो अगस्त तक इस वेबसाइट का काम समाप्त होने की संभावना है, जिसके उपरांत इसे किसान भाइयों और ग्राहकों के लिए लॉन्च किया जाएगा।

जानिए कैसे होगा किसानों का लाभ

किसानमार्ट पोर्टल उन किसानों के लिए एक जरिया बनेगा जो अपने कृषि उत्पाद सीधा छोटे ग्राहकों अथवा खुदरा उपभोक्ताओं को उपलब्ध कराना चाहते हैं। वह किसान इस पोर्टल के माध्यम से किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) और स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) जैसे समूह भी अपने उत्पाद बेच सकेंगे। किसानमार्ट पोर्टल एक ई–कॉमर्स प्लेटफॉर्म है, जो किसानों और कृषि उद्यमियों को उनके उत्पादों को ज्यादा बाजार में पहुंचाने में सहायता करेगा।

इससे किसानों को बिचौलियों से सहूलियत मिलेगी और उत्पाद सीधा ग्राहकों तक पहुंचेगा, जिससे किसानों का भी फायदा होगा। बिचौलियों को दूर करने से किसानों की आमदनी भी बढ़ेगी और छोटे और सीमांत किसानों को सशक्त करने के लिए विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों के स्थानीय और विशेष उत्पादों को बढ़ावा मिलेगा।

India's First

Gear Shift Rotavator

Multi Speed Gearbox
with Lever Mechanism
to change the Rotor RPM

GOLD

FIELDKING

जानिए कौन–कौन से उत्पाद बड़ी सहजता से मिलेंगे

अटारी की टेक्नोलॉजी टीम द्वारा विकसित पोर्टल को पायलट प्रोजेक्ट के रूप में अनावरण किया गया है। इस वेबसाइट पर कृषकों द्वारा उगाई गई बाजरा, फलों, सब्जियों, मशरूम, सब्जियों, तेल, मसाले और अनाज जैसे उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला मौजूद है।

ग्राहकों के लिए वेबसाइट पर आकर खरीदारी करना सरल होगा। इसके अलावा किसान पोर्टल के माध्यम से बीज, जैविक खाद और खेती–बाड़ी से जुड़े उपकरण भी उपलब्ध होंगे। ई–कॉमर्स प्लेटफॉर्म के माध्यम से विक्रय किए जाने वाले सभी उत्पाद किसान समृद्धि के समान ब्रांड के अंतर्गत होंगे। इसका अर्थ यह है, कि ग्राहकों को पोर्टल के जरिए से अलग.–अलग किसान केंद्रित योजनाओं जैसे ओडी.ओपी (एक जिला एक उत्पाद) से आने वाले उत्पाद और भौगोलिक संकेत (जीआई) टैग वाली फसलें और सामान भी बहुत आसानी से खरीद सकेंगे।

कृषि उत्पादों को डिजिटल माध्यम से बेचने के लिए अहम कवायद

आईसीएआर के महानिदेशक हिमांशु पाठक ने कहा कि इस पोर्टल के प्रारंभ होने से पूरे भारत में लाखों कृषकों और कृषि उद्यमियों को लाभ मिलेगा। ऐसा करके यह कृषि उत्पादों को डिजिटल बनाने की प्रक्रिया में क्रांति कर सकता है।

ATARI ई–मार्केटप्लेस को बढ़ाने और शुरू करने के लिए, सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ एडवांस कंप्यूटिंग (C&DAC) और ICAR&IASRI की विशेषज्ञता का सहयोग लिया जाएगा। इसके साथ ही, इन उत्पादों को ऑनलाइन माध्यम से बेचने के लिए लॉजिस्टिक्स और डिलीवरी के लिए डेल्हीवेरी और भारतीय डाक के साथ साझेदारी भी की जाएगी।

स्कूली छात्रों को हाइड्रोपोनिक तकनीक का प्रशिक्षण दिया जाएगा

आने वाले समय में स्कूलों में छात्रों को बागवानी करने की शिक्षा प्रदान की जाएगी। विद्यार्थियों को हाइड्रोपोनिक खेती के जरिए से पानी को रिसाइकिल करना भी बताया जाएगा। बदलते वक्त के साथ–साथ खेती किसानी में नई–नई तकनीकों का उपयोग किया जा रहा है। आज के वक्त में किसान परंपरागत खेती को छोड़कर नवीन उपरकणों की सहायता से खेती कर रहे हैं। साथ ही, नवीन पद्दति भी इस क्षेत्र में निरंतर लाई जा रही हैं। ऐसी स्थिति में हाइड्रोपोनिक प्रणाली भी खेती–बागवानी को सरल बना रही है। इससे आने वाली समस्याओं से निपटने में सहायता मिल रही है। अब दिल्ली सरकार के स्कूलों में पढ़ने वाले छात्रों को भी इस तकनीक से वाकिफ कराया जाएगा।

100 स्कूलों में हाइड्रोपोनिक प्रणाली स्थापित की जाएगी

बतादें, कि समग्र शिक्षा के अंतर्गत 100 स्कूलों में हाइड्रोपोनिक प्रणाली स्थापित की जाएगी। फिर कार्यशाला के जरिए विद्यार्थियों को प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। खबरों की मानें तो छात्रों को इस बारे में जानकारी देने का मकसद आने वाले वक्त में खुले स्थानों का होने वाला अभाव भी है। अब छात्रों को स्कूलों में ही बताया जाएगा कि वे कैसे बिना मृदा के ही सब्जियां उगा सकते हैं। इसमें विद्यार्थियों को सब्जियों में पीएच स्तर व पोषक तत्वों के प्रबंधन के बारे में भी बताया जाएगा। इसके साथ–साथ पौधों को सही पोषक तत्व मिले इसकी भी जानकारी मुहैय्या कराई जाएगी।

हाइड्रोपोनिक तकनीक से छात्रों को क्या जानकारी मिलेगी ?

इस दौरान छात्र हाइड्रोपोनिक खेती के माध्यम से पानी की रीसाइक्लिंग करना भी जान पाएंगे। साथ ही, रासायनिक खरपतवार और कीट नियंत्रण से संबंधित जानकारी भी उन्हें प्रदान की जाएगी।

बताते चलें, कि ये एक बेहद ही आधुनिक तकनीक है। इस तकनीक के माध्यम से बालू और कंकड़ों के बीच की खेती की जाती है। वहीं, पौधों को सही पोषण देने के लिए पोषक तत्व और खनिज पदार्थों का घोल बनाकर इस्तेमाल किया जाता है। साथ ही, इस तकनीक के बारे में जानकारी देने के लिए विशेष कार्यशाला आयोजित होंगी, जिनमें नौवीं और दसवीं के विद्यार्थियों को विशेष रूप से शामिल किया जाएगा।

एक टीचर को नोडल के रूप में नामित किया जाएगा

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि स्कूल के मुखियाओं को स्कूल में हाइड्रोपोनिक सेटअप की स्थापना करने के लिए सही जगह की पहचान करने के निर्देश दिए गए हैं। कार्यशाला के लिए विघालयों की तरफ से एक टीचर को नोडल के रूप में नामित करना होगा। वर्कशॉप के पश्चात छात्रों से फीडबैक यानी प्रतिक्रिया भी ली जाएगी।

क्या है गूलर का पेड़ और इससे मिलने वाले विविध लाभ ?

गूलर का पेड़ विशालकाय वृक्ष हैं। गूलर के पेड़ की लम्बाई 30–40 फीट होती है। गूलर के पेड़ पर हल्के हरे रंग का फल आता हैं जो पकने के बाद लाल रंग का दिखाई देता हैं। गूलर के पेड़ पर लगने वाले फल अंजीर के समान दिखाई पड़ते है। गूलर का पेड़ भारत देश में पाया जाने वाला बहुत ही आम पेड़ है।

यह पेड़ अंजीर प्रजाति का हैं, इसे अंग्रेजी भाषा में कलस्टर फिग (Cluster Fig) भी कहते है। गूलर के पेड़ की सबसे मुख्य बात ये हैं की इसके पौधे में ज्यादा पानी नहीं देना पड़ता हैं इसमें 3–4 दिन में सिर्फ एक बार पानी दिया जाता हैं गूलर के पेड़ को अच्छे से विकसित होने में कम से कम 8–9 साल का वक्त लगता है।

गूलर के फल में कीड़े क्यों पाए जाते हैं

गूलर और पीपल के पेड़ को एक ही प्रजाति का माना जाता है। गूलर का फल चाहे बंद हो लेकिन गूलर का फूल खिलता हैं इसमें परागण करने के लिए कीड़े प्रवेश करते है। यह कीड़े फल का रस चूसने के लिए इसमें प्रवेश करते है।

गूलर का फूल कब खिलता हैं

गूलर का फूल कब खिलता हैं और कैसा होता हैं ये आज तक कोई नहीं जान पाया। माना जाता हैं गूलर का फूल रात में खिलता हैं जो किसी को दिखाई नहीं पड़ता है। गूलर के फूल को धन कुबेर से सम्बोधित किया जाता हैं, गूलर के पेड़ को धार्मिक रूप से अत्यधिक महत्व दिया जाता है।

गूलर के पेड़ से मिलने वाले फायदे क्या हैं

- गूलर के दूध की 10–15 बूँदे पानी में मिलाकर पीने से बबासीर जैसे रोगों में फायदा मिलता हैं साथ ही इसके दूध को मस्सों पर लगाने से मस्से दब जाते है।
- गूलर के फल का सेवन पेट दर्द जैसे रोगों में भी सहायक हैं।
- गूलर का फल खाने से मधुमेह जैसे रोगों में सहायता मिलती हैं साथ ही ब्लड शुगर को भी नियंत्रित करता है।
- गूलर के पत्तों के साथ मिश्री को पीस कर खाने से मुँह में गर्मी की वजह से होने वाले छालों में फायदेमंद रहता है।

रक्त विकार में गूलर के फायदे

रक्त विकार यानी शरीर के किसी भी अंग से अगर खून बहता हैं जैसे नाक से खून आना, मासिक धर्म जैसे रोगों में अधिक रक्तचाप होना इन सभी रोगो के लिए फायदेमंद है। इसमें गूलर के पके हुए 3–4 फलो को चीनी के साथ दिन में 2–3 बार लेने से आराम मिलता हैं।

घाव भरने में गूलर की छाल हैं उपयोगी

किसी भी घाव को जल्द से जल्द भरने के लिए गूलर की छाल का हम प्रयोग कर सकते है। गूलर की छाल का काढ़ा बनाकर उससे घाव को यदि रोजाना धोया जाये तो उससे घाव के भरने की ज्यादा सम्भावना रहती है। गूलर में रोपड़ नामक गुण पाया जाता हैं जो की घाव को भरने में सहायता करता है।

पाचन किर्या में हैं सहायक

गूलर के फल को पाचन किर्या के लिए भी इस्तेमाल किया जाता हैं। गूलर का फल भूख को भी नियंत्रित करता हैं साथ ही स्वास्थ्य को भी स्वस्थ रखने में मददगार होता है। यह अल्सर जैसी बीमारियों को रोकने में भी लाभकारी साबित होता है।

गूलर से होने वाले नुक्सान

गूलर का इस्तेमाल आयुर्वेदिक दवाईयों के लिए भी किया जाता हैं, लेकिन कभी कभी गूलर का ज्यादा इस्तेमाल करना भी हानिकारक हो जाता हैं।

आँतो पर सूजन आने की संभावनाऐं

गूलर के फल का सेवन ज्यादा नहीं करना चाहिए क्यूंकि इससे आँतों पर सूजन आने की ज्यादा आशंकाए रहती हैं, माना जाता हैं इसके ज्यादा इस्तेमाल से आँतों में कीड़े पड जाते हैं। गर्भवती महिलाओं को कभी भी इसका सेवन ज्यादा नहीं करना चाहिए, अगर वो इनका इस्तेमाल करती हैं तो डॉक्टर से परामर्श लेकर वो गूलर का उपयोग कर सकती है।

ब्लड प्रेशर का कम होना

गूलर के ज्यादा उपयोग से ब्लड प्रेशर के भी कम होने की ज्यादा सम्भावनाये रहती है। जो की हार्टअटैक से जुडी बीमारियों को भी जन्म देता हैं। ब्लड प्रेशर के कम होनी की वजह से शरीर में ब्लड का सर्कुलेशन बिगड़ जाता हैं और धीमा पड जाता है। इसीलिए गूलर के फल का बहुत ही कम उपयोग करना चाहिए।

अलेर्जिक रिएक्शन

गूलर के फल को खाने से इम्मुनिटी मिलती है। गूलर का फल फायदेमंद रहता हैं लेकिन इसके ज्यादा उपयोग से शरीर को नुक्सान पहुँच सकता हैं। गूलर के फल को खाने से शरीर में अलेर्जी जैसे बीमारियां भी उत्पन्न सकता हैं। यदि आपको लगे की गूलर के खाने से शरीर में कोई एलेर्जी महसूस हो रही हैं तो उसी वक्त उसका सेवन करना छोड़ दे। जैसा की आप को बताया गया की गूलर जड़ी बूटियों का पौधा है, जो की बबासीर, पिम्पल्स और मस्कुलर पैन में लाभकारी होता है। गूलर का इस्तेमाल बहुत से आयुर्वेदिक दवाइयों में भी इस्तेमाल किया जाता हैं।गूलर खून के अंदर आरबीसी (रेड ब्लड सेल) को बढ़ाता हैं, जो पूरे शरीर में ब्लड सर्कुलेशन (खून के रक्तचाप) को संतुलित बनाये रखती है। गूलर का पेस्ट बनाकर और उसे शहद में मिलाकर लगाने से जलने के निशान भी चले जाते है।

कैसा होता है कैसुरीना का पेड़, जानिए सम्पूर्ण जानकारी

कैसुरीना के पेड़ को देसी पाइन के नाम से भी जाना जाता है। यह फूलो के पौधों की एक प्रजाति है, जो कैसुरिनासी परिवार से सम्बंधित है। यह भारतीय उपमहाद्वीप और ऑस्ट्रेलिया का मूल निवासी है।इस पेड़ की पत्तियां शाखाओ के चारो ओर बिखरी हुई होती है। साथ ही इस पेड़ में नर और मादा फूल अलग अलग स्पाइक्स में व्यवस्थित होते है।

कैसुरीना का पौधा दरारयुक्त रहता है, साथ ही यह पेड़ भूरे काले रंग और पपड़ीदार छाल वाले होते है। इस पेड़ की शाखाये नरम और नीचे की तरफ झुकी हुई होती है। हिंदी में कैसुरीना के पेड़ को जंगली सारू के नाम से भी जाना जाता है। कैसुरीना वृक्ष बहुत तेजी से बढ़ने वाला एक सदाबहार वृक्ष है। इस पेड़ की ऊंचाई 40 मीटर होती है, साथ ही इस पेड़ का व्यास यानी चौड़ाई 60 सेंटीमीटर होता है। यह पेड़ ज्यादातर समुन्द्र तट पर पाया जाता है, इसके लिए रेतीली मिट्टी को उपजाऊ बताया जाता है। यह पेड़ काल्पनिक होने के साथ साथ दृण भी है, इस वृक्ष की प्राकर्तिक जीवन अवधी 50 वर्ष से भी अधिक होती है।

भारत में कैसुरीना वृक्ष की खेती

यह पेड़ दक्षिण पश्चिम और उत्तर पूर्वी दोनों मोनसून में अच्छे से बढ़ती है। दक्षिण भारत में इसकी खेती रेतली समुन्द्र तटों को फिर से प्राप्त करने के लिए की जा रही है। लेकिन उत्तरी भारत में इसका उत्पादन ज्यादातर ईंधन के लिए किया जाता है। बागवान इस पेड़ का उत्पादन ज्यादातर बागो की सजावट के लिए करते है। साथ ही हॉट हाउस जैसे जगहों की सजावट के लिए इस पेड़ को लगाया जाता है।

यह पेड़ बहुत ही ठोस होता है इसीलिए इसे आइरनवुड के नाम से भी जाना जाता है। यह पेड़ ज्यादातर उष्णकटिबंधीय क्षेत्रो में रेतीली मिट्टी में उगाया जाता है। इस पेड़ की शाखाएँ असमान छाल से ढकी हुई होती है। इस पेड़ की लकड़ी काफी मजबूत होती है, इसीलिए इसका उपयोग बाड़ आदि लगाने के लिए भी किया जाता है। कैसुरीना के पेड़ में नाइट्रोजन की मात्रा को स्थिर करने वाली ग्रंथिया भी पायी जाती है। साथ ही यह पेड़ 47 डिग्री से अधिक तापमान को भी सहन कर सकता है। इस वृक्ष पर जो फूल आते है वो आमतौर पर एकलिंगी होते है।

साल में इस पर दो बार फूल आते है पहले तो जनवरी से फरवरी की समय अवधी में उसके बाद इसपर 6 महीने बाद ही फूल देखने को मिलते है। इसमें नर फूल बेलनाकार के जैसे दिखाई पड़ते है यही मादा फूल शाखा की धुरी में स्तिथ होते है, जिनके घने सिर होते है। यह मादा फूल छोटी कलियों के जैसे दिखते है यह फूल मुड़े हुए होते है और लाल रंग के बालो से ढके हुए होते है। ज्यादातर इन सिरों को समूह के रूप में देखा जाता है। कुछ समय बाद यह कली शंक के जैसा आकर ग्रहण कर लेती है और इस पर से घने लाल बाल झड़कर निचे गिर जाते है।

भारत में कैसुरिना पेड़ का उपयोग

कैसुरीना पेड़ की लकड़ी ठोस होती है, इसीलिए बढ़ई भी इसके साथ काम करने में असमर्थ रहते है। यह पेड़ बीम और पोस्ट के लिए अधिक उपयोगी माना जाता है। ज्यादातर इस पेड़ का उत्पादन ईंधन के लिए किया जाता है, यह दुनिया की सबसे अच्छी जलाऊ लकड़ियों में से एक है। यह पेड़ लम्बे समय तक भूमिगत नहीं रहता है, इस पेड़ को 10 –12 साल पुराना होने पर अपने उपयोग के लिए काट लिया जाता है। आमतौर पर कैसुरिना की छाल का उपयोग मछुआरों के जालों को रंगने के लिए किया जाता है।

यह पेड़ मिट्टी की उर्वरकता के साथ साथ स्वास्थ्य के लिए भी बेहद लाभकारी होता है। यह पेड़ मिट्टी की उत्पादन क्षमता को बनाये रखता है, साथ ही इससे पर्यावरण भी अनुकूल प्रभाव पड़ते है। यह पेड़ फसल चक्र और सिंचाई जैसी गतिविधियों में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान करता है। साथ ही यह पेड़ वन्य जीवो के लिए भी आश्रय प्रदान करता है। इस पेड़ की लकड़ी का उपयोग फर्नीचर आदि बनाने के लिए भी किया जाता है। साथ ही यह भूनिर्माण उद्देश्यों के लिए भी उपयोग किया जाता है। यह पेड़ सांस्कृतिक और पारिस्थितिक रूप से हमारे पर्यावरण का एक महत्वपूर्ण अंग बने हुए है।यह हमे स्वास्थ्य से लेकर भवन निर्माण और दवा तक के श्रोत प्रदान करता है। इस पेड़ को ऑस्ट्रेलियाई देवदार, आइरनवुड और वीफवूड के नाम से भी जाना जाता है।

ट्रैक्टर की जानकारी के लिए हमारी वेबसाइट
www.merikheti.com पर विजिट करे

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (IARI) पूसा ने किसानों के हित में उठाया बड़ा कदम

किसान भाइयों के लिए फसलों की कटाई के उपरांत सबसे बड़ी चुनौती उन्हें नुकसान होने से बचाने की होती है। इसके लिए बहुत से किसान कोल्ड स्टोरेज का उपयोग करते हैं।

कोल्ड स्टोरेज फसलों को संरक्षित रखने का एक अच्छा तरीका है। भारत में लाखों की संख्या में कोल्ड स्टोरेज उपलब्ध हैं। अनाज, फल और सब्जियों का भंडारण करके किसान उनको बर्बाद होने से बचा सकते हैं। इसके पश्चात उन्हें बाद में शानदार कीमतों पर बेचा जा सकता है। विगत कुछ वर्षों में किसानों का रूझान कोल्ड स्टोरेज की तरफ बढ़ा है। परंतु, कोल्ड स्टोरेज की तकनीक काफी मंहगी होने की वजह से सभी किसान इसका फायदा नहीं उठा पाते हैं। ऐसे ही किसानों की सहायता के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (IARI), पूसा ने देश का सबसे सस्ता कोल्ड स्टोरेज तैयार किया है।

PUSA के वैज्ञानिकों ने इसका श्पूसा फार्म सन फ्रिजश (Sun Farm Fridge) नाम रखा है। यह किसानों की फसलों को खराब होने से बचाने का एक सबसे सस्ता उपाय है। इस कोल्ड–स्टोरेज को किसान बड़ी आसानी से अपने घर पर स्थापित कर सकेंगे, जिसमें उनका कोई ज्यादा खर्चा नहीं होगा।

कोल्ड स्टोरेज की विशेषताएं क्या–क्या हैं ?

बतादें, कि किसानों को फल–सब्जियों और अनाज के नष्ट होने से काफी नुकसान होता है। परंतु, पूसा का ये कोल्ड स्टोरेज किसानों की चुनौतियों को हल कर देगा। पूसा द्वारा विकसित किए गए इस कोल्ड स्टोरेज में फल–सब्जियों को सुरक्षित रखा जा सकेगा। यदि श्पूसा फार्म सन फ्रिजश की खूबियों की बात करें तो इसे चलाने के लिए अगल से किसी बिजली या बैटरी की जरूरत नहीं होगी। इसमें 415 वॉट के 12 सोलर पैनल लगे हैं, जो इसे चलाने के लिए बिजली तैयार करते हैं। इसके अतिरिक्त इसमें हर मौसम के अनुरूप तापमान एडजस्ट किया जा सकता है। यानी गर्मियों में ये अंदर से ठंडा और ठंड में अंदर से गर्म रहता है। इसकी भंडारण क्षमता 2 से 5 टन के आसपास है। इसका आकार 3•3•3 मीटर है और इसे सुगमता से कहीं भी स्थापित किया जा सकता है। इसको तैयार करने में लगभग 7 से 8 लाख रुपये का खर्चा आता है।

IARI की शोधकर्ता टीम ने हांसिल की सफलता

IARI शोधकर्ता डॉ. संगीता चोपड़ा के साथ वैज्ञानिकों की एक टीम ने इस कोल्ड स्टोरेज सिस्टम को तैयार किया है। टीम में मिशिगन यूनिवर्सिटी, अमेरिका के डॉ. रैंडॉल्फ ब्यूड्री और डॉ. नॉर्बर्ट म्यूएलर भी शम्मिलित थे। डॉ. संगीता के मुताबिक, भारत में प्रति वर्ष हजारों टन अनाज और अन्य कृषि उत्पाद उचित देखरेख न करने के चलते नष्ट हो जाते हैं। इसके लिए किसानों के पास कोल्ड स्टोरेज की सुविधा तो है। परंतु, वह काफी महंगी है। इसको देखते हुए पूसा ने इस सस्ते कोल्ड स्टोरेज को तैयार किया है।

किसानों की परेशानी दूर होगी

बतादें, कि आईआरआई किसानों के फायदे के लिए हमेशा रिसर्च और नए–नए प्रयोग करता रहता है। ताकि किसानों को उन्नत सुविधाएं प्राप्त कर सकें। एक अंकड़े के मुताबिक, प्रति वर्ष सही देखभाल न होने की वजह से किसानों की लगभग 10% प्रतिशत फसल खराब हो जाती है। इससे उन्हें नुकसान उठाना पड़ता है। परंतु, आईआईआर के गहन अध्ययन और शोध के जरिए इस नई तकनीक को विकसित किया है। यह कवायद इसलिए की गई है, जिससे किसानों की लागत को कम किया जा सके और उनकी आमदनी में भी बढ़ोतरी हो सके।

पीएम फसल बीमा योजना के लाभार्थी किसानों की संख्या में 27% प्रतिशत वृद्धि ?

भारतीय किसानों ने पिछले साल बहुत सारी प्राकृतिक आपदाओं का सामना किया था। प्राकृतिक आपदाओं और मौसम के कहर से किसानों की फसल बुरी तरह क्षतिग्रस्त हुई और उन्हें काफी घाटा उठाना पड़ा। इस हानि से सबक लेते हुए हजारों किसानों ने प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के अंतर्गत अपनी फसलों को सुरक्षित करवाया है। दरअसल, सरकार ने मंगलवार को कहा कि प्रमुख फसल बीमा योजना पीएमएफ. बीवाई (PMFBY) के तहत नामांकित किसानों में 27% प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। 2023–24 के दौरान खरीफ और रबी दोनों सीजन में कुल नामांकन में गैर–ऋण किसानों की हिस्सेदारी 42% प्रतिशत थी। हालांकि, विशेषज्ञों द्वारा इस वर्ष की वृद्धि का श्रेय महाराष्ट्र और ओडिशा द्वारा किसानों के प्रीमियम के हिस्से को पूरी तरह से वहन करने के निर्णय को दिया गया है।

अब तक कितने लाख करोड़ किसानों को हुआ लाभ

कृषि मंत्रालय ने एक बयान में कहा, षवित्त वर्ष 2023–24 में फसल बीमा योजना के अंतर्गत अब तक 56.8 करोड़ किसान लाभान्वित हो चुके हैं। योजना से लाभान्वित होने वाले किसानों के आंकड़ों में 27 फीसद का इजाफा दर्ज किया गया है। इस योजना को लागू हुए आठ साल हो चुके हैं। अब तक 56.80 करोड़ किसानों के आवेदन मंजूर किए जा चुके हैं, जिसमें से 23.22 करोड़ किसानों को उनका हर्जाना मिल चुका है। इस वित्तीय वर्ष के दौरान किसानों द्वारा 31,130 करोड़ की धनराशि जमा कराई गई, जिसके विरोध में उन्हें 1,55,977 करोड़ रुपए का भुगतान किया गया। इस तरह, किसानों ने अगर 100 रुपए भुगतान किए हैं, तो इसके बदले में उन्हें 500 रुपए का भुगतान प्राप्त हुआ है।

सरकार की पहल के चलते किसानों को मिलने वाली धनराशि में निरंतर वृद्धि हो रही है। किसान स्वेच्छा से योजना की सदस्यता ले रहे हैं। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना किसानों को उनकी फसलों को नुकसान से बचाने की दिशा में अहम भूमिका अदा कर रहा है। विशेषकर तब, जब प्राकृतिक आपदा की चपेट में आकर किसानों को काफी नुकसान पहुंचता है।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना विश्व की तीसरी बड़ी योजना है प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (पीएमएफबीवाई) एक मांग आधा. रित योजना है। यह राज्यों के साथ–साथ किसानों के लिए भी स्वैच्छिक है। 2021–22 और 2022–23 के दौरान किसान आवे. दनों की संख्या में साल–दर–साल क्रमशः 33.4 प्रतिशत और 41% प्रतिशत का इजाफा हुआ है। इसके अतिरिक्त वर्ष 2023–24 के दौरान अब तक योजना के तहत नामांकित किसानों की संख्या में 27% प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। साथ ही, वित्त वर्ष 2023–24 में योजना के अंतर्गत बीमित कुल किसानों में से 42% प्रतिशत गैर–ऋणी किसान हैं। प्रीमियम के लिहाज से यह विश्व की तीसरी बड़ी योजना है।

फसल बीमा योजना क्या है ?

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि फसल बीमा योजना की शुरुआत साल 2016 में हुई थी, जो कि किसानों को अप्रत्याशित घटनाओं से होने वाली फसल हानि या क्षति से बचाता है। कृषि और परिवार कल्याण विभाग नियमित रूप से पीएमएफबीवाई के कार्यान्वयन की निगरानी कर रहा है, जिसमें हितधारकों के साप्ताहिक वीडियो कॉन्फ्रेंस बीमा कंपनियोंध्राज्यों के साथ बैठक आदि के माध्यम से दावों का समय पर निपटान शामिल है।

PREET

FARMING WITH PASSION

Fly through the Tough Stuff

6549

2 Wheel Drive & 4 Wheel Drive

4 Wheel Drive

- Carraro Synchronisation Transmission
- Carraro Front Axle
- ABC Speed
- Reverse Speed = Forward Speed
- 2600 KG Liftomatic Hypersensitive Powerful Lift
- Multi Speed PTO & Ground PTO 540/1000
- Power Steering
- Electronic Meter (Optional)
- Planetary Oil Immersed Brakes
- Extra Leg Space
- Dry Air Cleaner
- Extra Radiator Coolant
- Mobile Charger

2 Wheel Drive / 4 Wheel Drive

- Sliding Mesh 8+2 Center Gear
- Oil Immersed Brakes
- Power Steering
- Reverse PTO
- Auxiliary Valve
- Mobile Charger
- Electronic Meter (Optional)

More Power. More Comfort

7549

4 Wheel Drive

4 Wheel Drive

- Carraro Synchronisation Transmission
- Carraro Front Axle
- ABC Speed
- Reverse Speed = Forward Speed
- 2600 KG Liftomatic Hypersensitive Powerful Lift
- Multi Speed PTO & Ground PTO 540/1000
- Power Steering
- Electronic Meter (Optional)
- Planetary Oil Immersed Brakes
- Extra Leg Space
- Dry Air Cleaner
- Extra Radiator Coolant
- Mobile Charger

महाराष्ट्र सरकार ने किसानों के हित में एक ऐप का अनावरण किया

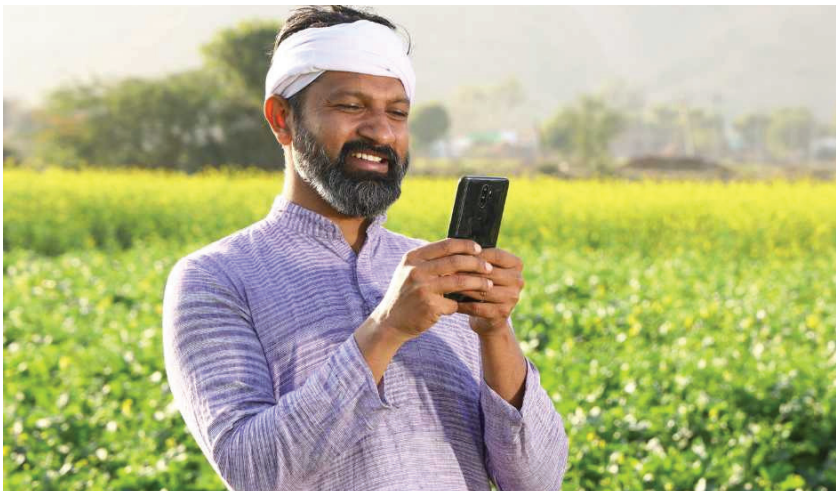

महाराष्ट्र सरकार ने प्रदेश के किसानों को काफी बड़ी सौगात देते हुए उनके लिए एक नया ऐप तैयार किया है। इस ऐप के माध्यम से महाराष्ट्र के किसान पशुपालन के लिए घर बैठे ही सलाह मशवरा ले सकेंगे।

केंद्र सरकार हो अथवा राज्य सरकार हो दोनों ही सरकारें किसानों के लिए बेहद हितकारी योजना चलाती हैं। महाराष्ट्र सरकार ने राज्य के कृषकों को बड़ी सौगात देते हुए उनके लिए एक नई ऐप बनाई है। इस ऐप के अंतर्गत महाराष्ट्र के कृषकों को पशुपालन के लिए सहूलियत मिलेगी। इस ऐप के माध्यम से किसान पशुपालन के लिए घर बैठे ही परामर्श ले सकेंगे। महाराष्ट्र के कृषि मंत्री धनंजय मुंडे ने इस ऐप को लॉन्च किया है।

इस ऐप से किसानों को क्या फायदा होगा ?

महाराष्ट्र सरकार द्वारा तैयार किया गया ऐप जिसका नाम है श्फुले अमृतकालश पशुसल्ला मोबाइल ऐप। यह किसानों को अलग–अलग परिस्थितियों में सहायता प्रदान करेगी। ऐप को लॉन्च करते समय कृषि मंत्री धनंजय मुंडे ने यह भी बताया कि अलग–अलग परिस्थितियों के चलते पशुओं के लिए चारा और पानी के लिए मुश्किल हो जाती है।

यह ऐप ऐसी परिस्थितियों में पशुपालक की सहायता करेगा। इस ऐप के माध्यम से किसान जानवरों को गर्मी के समय तनाव से बचने के लिए छाया कैसे दें यह जान सकते हैं। इसके साथ ही वेंटिलेशन बनाना, पीने के लिए ठंडा पानी उपलब्ध करवाना, पंख और फॉगर प्रणाली को चलाना और पशुओं के लिए संतुलित आहार की योजना बनाना। यह सब काम इस ऐप के माध्यम से हो सकते हैं।

ऐप को कैसे डाउनलोड करें ?

इस ऐप को डाउनलोड करने के लिए आप गूगल प्ले स्टोर एप का इस्तेमाल कर सकते हैं। आप सर्च बॉक्स में जाकर श्फुले अमृतकाल (Phule Amrutkal) टाइप करके सर्च करेंगे, तो आपके सामने पहले स्थान पर ही महाराष्ट्र सरकार की यह फुले अमृतकाल मोबाइल ऐप आ जाएगी।

इसके बाद आपको इस ऐप पर रजिस्टर करना होगा। इसके लिए आपको अपना नंबर डालना पड़ेगा। इसके बाद ओटीपी दर्ज करनी होगी। फिर आपको अपना पता दर्ज करना होगा। आप रजिस्टर होने के बाद ऐप को दोबारा खोल सकते हैं। इसके बाद आप जिस गौशाला को सेलेक्ट करते हैं या जिस स्थान को सेलेक्ट करते हैं, उसका तापमान और आद्रता सूचक. ांक आपके सामने आ जाता है। जिससे गायों के तनाव की जानकारी मिलती है। फिर उसी हिसाब से आपको सलाह दी जाती है। इस ऐप के माध्यम से ओपन सोर्स मौसम की जानकारी के साथ–साथ आद्रता सेंसर का इस्तेमाल करके आपको रियल टाइम डाटा के आधार पर सलाह दी जाती है।

खुशखबरी: किसानों की भंडारित उपज पर अब मिलेगा ऋण, किसान कम कीमत पर नहीं बेचेंगे फसल

भारतीय किसानों को मोदी सरकार ने एक और बड़ा तोहफा दिया है। लोकसभा चुनाव 2024 से पहले–पहले केंद्र सरकार की तरफ से कृषकों के लिए एक नवीन योजना जारी करने की घोषणा की है। योजना के अंतर्गत किसान भाइयों को अब गोदाम में भंडारित अनाज पर भी कर्ज मिलेगा। ये ऋण वेयर हाउसिंग डेवलपमेंट एंड रेगुलेटरी अथॉरिटी (डब्ल्यूडीआरए) द्वारा प्रदान किया जाएगा। किसानों को केवल रजिस्टिर्ड गोदामों में अपने उत्पाद रखने होंगे, जिसके आधार पर उन्हें ऋण दिया जाएगा। यह लोन 7% प्रतिशत की ब्याज दर पर बिना किसी चीज को गिरवी रखे मिलेगा

सोमवार (4 मार्च, 2024) को उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्री, पीयूष गोयल ने दिल्ली में डब्ल्यूडीआरए के ई–किसान उपज निधि (डिजिटल गेटवे) की शुरुआत करने के अवसर पर ये जानकारी प्रदान की। पीयूष गोयल ने कहा कि इस डिजिटल प्लेटफार्म के जरिए कृषकों को बैंक के साथ संबंध बनाने का विकल्प भी दिया जाएगा। फिलहाल, डब्ल्यूडीआरए के पास देश भर में तकरीबन 5,500 रजिस्टर्ड गोदाम हैं। गोयल ने बताया कि भंडारण के लिए अब सुरक्षा जमा शुल्क कम हो जाएगा। इन गोदामों में किसानों को पहले अपनी पैदावार का 3% प्रतिशत सुरक्षा जमा राशि देनी पड़ती थी। वर्तमान में सिर्फ 1 प्रतिशत सुरक्षा जमा धनराशि देनी पड़ेगी। उन्होंने कहा कि किसानों के लिए गोदामों का इस्तेमाल करने और उनकी आमदनी में इजाफा करने के लिए यह फैसला लिया गया है।

किसान अपनी उपज कम भाव पर बेचने के लिए नहीं होंगे मजबूर

गोयल ने कहा कि ई–किसान उपज निधि किसानों को संकट के वक्त में उनके उत्पाद को कम मूल्य पर बेचने से बचाएगी। ई–किसान उपज निधि और टेक्नोलॉजी से किसान भाइयों को उनकी उपज की भंडारण की सुविधा मिलेगी। किसानों को उनके उत्पादों के लिए समुचित मूल्य प्राप्त करने में सहायता मिलेगी। उन्होंने कहा कि कृषि क्षेत्र 2047 तक भारत को श्विकसित भारत बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा। गोयल ने कहा कि हमारे प्रयास में डिजिटल गेटवे पहल खेती को आकर्षक बनाने का एक महत्वपूर्ण कदम है। कृषक भाई बगैर किसी संपत्ति को गिरवी रखे ई–किसान उपज निधि किसानों द्वारा संकट के समय में उनकी उपज बिक्री को रोक सकती है। अधि. कांश तौर पर किसानों को अपनी पूरी फसल को सस्ती दरों पर बेचना पड़ता है। क्योंकि, उन्हें फसल के पश्चात भंडारण की शानदार रखरखाव सुविधाएं नहीं मिलती हैं। गोयल ने कहा कि डब्लूडीआरए के अंतर्गत गोदामों की अच्छी तरह से निगरानी की जाती है।इनकी स्थिति काफी शानदार है और ये बुनियादी ढांचे से सुसज्जित हैं, जो कृषि उपज को अच्छी स्थिति में रखते हैं तथा खराब नहीं होने देते और इस तरह ये किसानों के कल्याण को बढ़ावा देते हैं। गोयल ने इस बात पर काफी जोर दिया है, कि श्ई–किसान उपज निधि' और ई–नाम के साथ किसान एक इंटरकनेक्टिड मार्केट की टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करने में सक्षम होंगे। जो कि उन्हें न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर या उससे ज्यादा की कीमत पर अपनी उपज को सरकार को बेचने का लाभ प्रदान करती है।

एमएसपी पर सरकारी खरीद दोगुना से ज्यादा बढ़ी है

गोयल ने कहा कि पिछले एक दशक में एमएसपी के माध्यम से सरकारी खरीद 2.5 गुना तक ज्यादा बढ़ी है। दुनिया की सबसे बड़ी सहकारी खाद्यान्न भंडारण योजना के विषय में बोलते हुए मंत्री ने डब्ल्यूडीआरए से सहकारी क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले समस्त गोदामों का फ्री रजिस्ट्रेशन करने के एक प्रस्ताव की योजना बनाने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि सहकारी क्षेत्र के गोदामों को मदद देने की पहल से किसानों को डब्ल्यूडीआरए गोदामों में अपनी उपज का भंडारण करने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा, जिससे उन्हें अपनी फसल बेचने पर काफी अच्छा भाव मिल सकेगा।

SINCE 1973 IN FARMER SERVICE
RASI SEEDS
RHR 333
संकर धान
साथ में बीएलबी सुरक्षा
हर परिस्थिति में
मैं हूँ खिलाड़ी
जीवाणु पर्ण झुलसा (BLB) के प्रति सहनशीलता
फसल अवधि 130 से 135 दिन
व्यापक अनुकूलनशीलता
RHR 333
HYBRID PADDY
A QUALITY RESEARCH PRODUCT OF RASI SEEDS (P) LTD.
Breeding Excellence

लुधियाना के पशुपालन मेले में किसानों को किया गया पुरस्कृत

पशुपालन व्यवसाय को बढ़ावा दिया गया है। पशुपालन व्यवसाय को प्रोत्साहित करने के लिए गुरमीत सिंह खुडियां कैबिनेट मंत्री ने वेटरनरी विश्वविद्यालय पशु पालन मेले में किसानों को मुख्यमंत्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

बतादें, कि इस मेले में पहला पुरस्कार एक किसान महिला को प्रदान किया गया है। गुरु अंगद देव वेटरनरी एंड एनिमल साइंसेज यूनिवर्सिटी, लुधियाना के पशुपालन मेले में असाधारण प्रदर्शन करने वाले प्रगतिशील किसानों को गुरमीत सिंह खुडियां कैबिनेट मंत्री पंजाब, कृषि एवं किसान कल्याण, पशुपालन, डेयरी और मत्स्य पालन ने मुख्यमंत्री पुरस्कार प्रदान किए। इस अवसर पर डॉ इंद्रजीत सिंह, वाइस चांसलर, डीन, निदेशक और विभिन्न संगठनों के अधिकारी मौजूद थे।

बतादें, कि डॉ प्रकाश सिंह बराड़, निदेशक प्रसार शिक्षा ने पुरस्कारों के बारे में बताते हुए कहा कि, श्पशुपालन व्यवसाय को प्रोत्साहित करने के लिए पंजाब के सभी किसानों से आवेदन मांगे जाते हैं। प्राप्त आवेदनों की प्रारंभिक जांच के बाद विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों की टीम ने विभिन्न फार्मों का दौरा किया और पशुपालकों द्वारा अपनाई गई नवीनतम और स्व–विकसित तकनीकों का बारीकी से निरीक्षण करने के बाद इन किसानों का चयन किया गया।

डेयरी फार्मिंग के लिए महिला किसान दलजीत कौर तूर को पुरुस्कृत किया गया

दलजीत कौर तूर, पत्नी गुरमीत सिंह तूर, गांव खोसा कोटला, जिला मोगा को भैंस डेयरी फार्मिंग श्रेणी में पुरस्कृत किया गया। विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित विभिन्न श्रेणियों में मुख्यमंत्री पुरस्कार प्राप्त करने वाली वह पहली किसान महिला हैं। उन्होंने 2019 में आधुनिक डेयरी स्थापित कर कार्य शुरू किया। आज उनके पास 32 नीली रावी भैंस हैं, जिसमें से 13 दूध देने वाली भैंसें प्रतिदिन 150 लीटर दूध दे रही हैं। इसी फार्म की एक भैंस सर्वाधिक 22 लीटर दूध भी दे चुकी है। वे उपभोक्ताओं को सीधे दूध बेचते हैं और घी भी निर्मित करते हैं। उन्होंने एक गोबर गैस संयंत्र भी स्थापित किया है और संयंत्र से निकलने वाले कचरे का उपयोग उर्वरक के तोर पर करते हैं। बकरी पालन के लिए बरजिंदर सिंह कंग को मिला पुरुस्कृत किया गया बकरी पालन के क्षेत्र में बरजिंदर सिंह कंग, पुत्र करनैल सिंह कंग, सरिहंद रोड, पटियाला को पुरस्कार प्रदान किया गया। एमबीए शिक्षित इस किसान ने तीन से चार साल तक कनाडा में भी कार्य किया। वहां से लौटने के उपरांत उन्होंने 2017 में एक बकरी फार्म शुरू किया। वर्तमान में, उनके पास बकरे, बकरी और मेमनों सहित 85 जानवर हैं। वे अपना भोजन स्वयं तैयार करते हैं और प्राकृतिक वनस्पति के आहार पर अधिक जोर देते हैं। उनके फार्म पर एक माह में लगभग 1500 लीटर दूध का उत्पादन होता है, जिसमें अधिकतम उत्पादकता 3.8 लीटर प्रतिदिन रही है।

मत्स्य पालन के लिए रूपिंदर पाल सिंह को पुरुस्कृत किया गया

मत्स्य पालन के क्षेत्र में यह सम्मान रूपिंदर पाल सिंह, पुत्र जसपाल सिंह, गांव जंडवाला चड़त सिंह, जिला मुक्तसर साहिब को प्रदान किया गया। वर्ष 2012 में उन्होंने 5 एकड़ भूमि पर मछली पालन शुरू किया है। वर्तमान में वह 36 एकड़ भूमि पर मछली पालन कर रहे हैं। बीटेक ग्रेजुएट इस किसान ने एक एकड़ से 2200 किलोग्राम पैदावार भी अर्जित की है। अब उन्होंने झींगा पालन भी प्रारंभ कर दिया है।

सूअर पालन के लिए बिक्रमजीत सिंह को पुरुस्कृत किया गया

सुअर पालन के क्षेत्र में ग्राम फतेहगढ़ शुक्रचक, जिला अमृतसर के बिक्रमजीत सिंह, पुत्र परमजीत सिंह को सम्मानित किया जाएगा। उन्होंने कंप्यूटर साइंस में बीटेक किया है और 2016 में यह कार्य शुरू किया था। वर्तमान में, उनके पास सूअर और उनके बच्चों समेत लगभग 650 जानवर हैं। सुअर पालन के क्षेत्र में, ग्राम फतेहगढ़ शुक्रचक, जिला अमृतसर के बिक्रम. जीत सिंह, पुत्र परमजीत सिंह को सम्मानित किया गया। उन्होंने कंप्यूटर साइंस में बीटेक किया है और 2016 में यह काम शुरू किया था।

बकरी पालन को बढ़ावा देने के लिए अनुदान, जानें आवेदन की प्रक्रिया

केंद्र एवं राज्य सरकारें किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए नई–नई योजनाऐं जारी करती रहती हैं। सरकार किसानों को सशक्त बनाने के लिए पशुपालन पर भी जोर दे रही है।

यदि आप भी बकरी पालन करके अपनी आमदनी को बढ़ाना चाहते हैं, तो कृषि विज्ञान केंद्र आपके लिए एक शानदार योजना लेकर आया है। दरअसल, मध्य प्रदेश के बुरहानपुर जनपद के कृषि विज्ञान केंद्र की तरफ से बकरी व चूजे खरीदने पर अनुदान प्रदान किया जा रहा है। यहां जानें आवेदन प्रक्रिया और जरूरी कागजात।

वर्तमान में ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि के साथ–साथ किसान पशुपालन के माध्यम से दोगुनी आमदनी हांसिल कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में अगर आप भी खेती–किसानी के साथ पशुपालन करना चाहते हैं, तो आपके लिए बकरी पालन एक शानदार विकल्प है। दरअसल, बकरी पालन करने के लिए सरकार की ओर से भी आर्थिक तोर पर सहायता उपलब्ध करवाई जाती है। मध्य प्रदेश सरकार प्रदेश के कृषकों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए बकरी पालन करने के लिए प्रोत्साहित कर रही है।

कृषि विज्ञान केंद्र की इस योजना का प्रमुख उद्देश्य क्या है ?

कृषि विज्ञान केंद्र (ज्ञतपीप टपहलंद ज्ञमदकतं) की ओर से चलाई गई इस योजना का प्रमुख उद्देश्य यह है, कि राज्य के किसान बकरी पालन कर अपनी आमदनी को बढ़ा सकें। साथ ही, राज्य में बकरी पालन के लिए कृषकों को प्रेरित किया जा सके। इसके अतिरिक्त कृषि विज्ञान केंद्र की बैठक में शामिल होने वाले किसानों को बकरी पालन से संबंधित विभिन्न महत्वपूर्ण जानकारियां भी दी जाऐंगी। जैसे कि बेहतरीन नस्ल की बकरी का चयन, बकरियों के लिए उन्नत पोषण स्तर, बकरियों के लिए आवास व्यवस्था और अन्य विभिन्न प्रकार की जानकारी दी जाऐंगी।

बकरी पालन के लिए 4 हजार रुपये प्रदान किए जाऐंगे

मध्य प्रदेश के बुरहानपुर जनपद के कृषि विज्ञान केंद्र की तरफ से राज्य के कृषकों को बकरी एवं चूजे खरीदने के लिए लगभग 4–4 हजार रुपये का अनुदान दिया जाएगा। परंतु, याद रहे कि ज्ञटज्ञ की इस सुविधा का लुफ्त उठाने के लिए किसानों का चयन कृषि वैज्ञानिकों के द्वारा ही किया जाएगा।

बकरी पालन पर अनुदान हेतु आवश्यक कागजात

- आधार कार्ड
- पैन कार्ड
- स्थाई निवास प्रमाण पत्र
- रजिस्टर मोबाइल नंबर
- पासपोर्ट साइज फोटो

बकरी पालन पर अनुदान के लिए आवेदन प्रक्रिया

यदि आप भी बुरहानपुर जनपद के कृषि विज्ञान केंद्र की इस सुविधा का फायदा उठाना चाहते हैं, तो इसके लिए आपको कृषि विज्ञान केंद्र के द्वारा आयोजित बैठकों में शामिल होना पड़ेगा। ताकि आप बकरी पालन से जुड़ी सभी जानकारी अर्जित कर सकें। बकरी पालन पर अनुदान के लिए किसान भाइयों को मध्य प्रदेश के बुरहानपुर जनपद के कृषि विज्ञान केंद्र से संपर्क करना होगा। ध्यान रहे, कि ज्ञटज्ञ की ओर से इस योजना के लिए किसानों के आवेदन पत्र अप्रैल महीने से भरे जाएंगे।

IFFCO
पूर्णतः सहकारी स्वामित्व
Wholly owned by Cooperatives

भारत की सबसे अमीर महिला किसान रत्नम्मा गुंडमंथा की कहानी

आज हम आपको भारत की सबसे अमीर महिला किसान रत्नम्मा गुंडमंथा जी के बारे में बताएंगे। कर्नाटक के कोलार जिले में स्थित श्रीनिवासपुरा शहर की रहने वाली महिला किसान रत्नम्मा गुंडमंथा खेती–किसानी के साथ–साथ फूड प्रोसे. सिंग का काम भी करती हैं।

रत्नम्मा गुंडमंथा को इससे सालाना एक करोड़ रुपये से भी अधिक की आमदनी होती हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा किसानों की आमदनी दोगुनी करने के दृष्टिकोण के अनुरूप, भारत के जो किसान कृषि के माध्यम से बेहतरीन मुनाफा कमा रहे हैं और किसानों के लिए एक आदर्श हैं। ऐसे सभी किसानों को राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर एक अलग पहचान दिलाने के उद्देश्य से महिंद्रा ट्रैक्टर्स द्वारा प्रायोजित मिलेनियर फार्मर ऑफ इंडिया अवॉर्ड–2023 शो में भारत के सैकड़ों मिले. नियर किसानों को एमएफओआई अवॉर्ड–2023 से सम्मानित किया गया था।

इस दौरान कर्नाटक के कोलार जिले में स्थित श्रीनिवासपुरा शहर की रहने वाली महिला किसान रत्नम्मा गुंडमंथा को वूमेन फार्मर कैटेगरी में केंद्रीय मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री पुरुषोत्तम रूपाला द्वारा 'नेशनल अवॉर्ड' दिया गया था। इस दौरान ब्राजील सरकार के सौजन्य से ब्राजील के एम्बेसडर केनेथ फेलिक्स हजिंस्की दा नोब्रेगा द्वारा 'वूमेन फार्मर' कैटेगरी में नेशनल अवार्डी फार्मर रत्नम्मा गुंडमंथा को सात दिनों के लिए ब्राजील जाने के लिए टिकट भी दिया गया था।

रत्नम्मा गुंडमंथा कितने एकड़ जमीन पर कृषि करती हैं?

आपकी जानकारी के लिए बतादें, कि महिला किसान रत्नम्मा गुंडमंथा के पास खेती योग्य समकुल 4 एकड़ ही जमीन है, जिसमें ये आम, बाजरा और रेशम के कीड़ों का पालन करती हैं। इनके पास दो एकड़ में आम के बगीचे हैं और एक एकड़ में ये बाजरे की खेती करती हैं। इसके अतिरिक्त रत्नम्मा गुंडमंथा एक एकड़ में रेशम के कीड़ों का भी पालन करती हैं। उन्होंने आईसीएआर–केवीके, कोलार द्वारा प्रदान की गई सर्वोत्तम तकनीक को अपने खेतों में अपनाया है। इसके अलावा उन्होंने केवीके, कोलार द्वारा आयोजित कैंपस प्रशिक्षण में पांच दिनों का व्यावसायिक प्रशिक्षण भी प्राप्त किया है।

रत्नम्मा गुंडमंथा कृषि के साथ और अन्य कार्य भी करती हैं

महिला किसान रत्नम्मा गुंडमंथा कृषि सहित फूड प्रोसेसिंग का भी कार्य करती हैं। कृषि के साथ–साथ अनाज का प्रसंस्करण, आम, बादाम और टमाटर का इस्तेमाल करके अचार और मसाला पाउडर उत्पाद निर्मित करके बेचती हैं। इसके लिए उन्होंने ICAR&IIHR बैंगलोर, ICAR&IIMR हैदराबाद और ने बगलकोट से प्रशिक्षण लेकर उसको अपनी कृषि पद्धतियों में शामिल किया है। बतादें, कि रत्नम्मा ने 2018–19 से अनाज का प्रसंस्करण शुरू किया था। इसके लिए उन्हें सरकार से भी मदद प्राप्त हुई। साथ ही, कृषि विभाग ने भी उनकी काफी मदद की।

महिला किसान रत्नम्मा गुंडमंथा की वार्षिक आय

महिला किसान रत्नम्मा गुंडमंथा वार्षिक तकरीबन 1.18 करोड़ रुपये की आय कर रही हैं। कृषि उत्पादों के साथ–साथ वे अनाज के उत्पादन और अनाज के प्रसंस्करण में भी शामिल हैं। रत्नम्मा अनाज और अनाज माल्ट, अनाज डोसा मिक्स, अनाज इडली मिक्स और अन्य आम उत्पाद जैसे आम का अचार, टमाटर का अचार, मसाला पाउडर उत्पाद को तैयार करती हैं।

मेरीखेती किसान पंचायत: साझा समर्थन और विकास की दिशा

मेरी खेती की टीम ने फरवरी माह में एक सामूहिक किसान पंचायत का आयोजन किया। इस पंचायत का उद्देश्य किसानों के बीच जागरूकता बढ़ाना, उनकी समस्याओं का समाधान करना और सामूहिक विकास की दिशा में कदम बढ़ाना था।

इस पंचायत का आयोजन मथुरा जिले के सोंख गांव में किया गया। इस कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य था कि कृषि वैज्ञानिक किसानों को कृषि की नई नई तकनीकों के बारे में जानकारी दे सकेऔर एक–दूसरे के साथ अपने अनुभव और ज्ञान को साझा कर सकें।

वैज्ञानिकों द्वारा प्रमुख विषयों पर चर्चा की गयी

इस किसान पंचायत में पूसा संस्थान के जाने माने वैज्ञानिक डॉ सी.बी. सिंह प्रिंसिपल साइंटिस्ट (RETD) IARI, डॉ जे, पी, एस डबास वरिष्ठ वैज्ञानिक IARI और चौधरी विजय रावत कृषि विशेषज्ञ ने कई विषयो पर किसानों को निम्नलिखित विषयों पर जानकारी दी –

मौसम और प्राकृतिक आपदाएं: वैज्ञानिकों ने किसानों द्वारा मौसम और प्राकृतिक आपदाओं का सामना करने के लिए कैसे तैयारी की जा सकती है, इस पर चर्चा की।

उचित मूल्य निर्धारण: किसानों ने अपनी उपज को बेहतर मूल्य में बेचने के लिए कौन–कौन सी रणनीतियों का अनुसरण करना चाहिए, इस पर गहन चर्चा की गई।

नई तकनीकों का सही तरीके से उपयोग: किसानों द्वारा तकनीकों के प्रभावी उपयोग के लिए कौन–कौन सी पहल करनी चाहिए, इस पर भी चर्चा की।

इस पंचयात में किसानों ने अपनी समस्याओं को साझा करने का मौका पाया। मुख्यतः, मौसम एवं प्राकृतिक आपदाओं, उचित मूल्य निर्धारण की कमी, और नई तकनीकों के प्रभावी उपयोग की चुनौतियों पर चर्चा हुई। इन समस्याओं का समाधान निकालने के लिए समृद्धि से भरी पंचयात आयोजित की गई। फरवरी की किसान पंचयात ने हमें एक सशक्त और समृद्धि युक्त गाँव की दिशा में कार्य करने का मौका प्रदान किया।

मेरीखेती अब 6 भाषाओ में उपलब्ध है

हिंदी | English | తెలుగు (Telugu) | ಕನ್ನಡ (Kannada) | ਪੰਜਾਬੀ (Punjabi) | தமிழ் (Tamil)

www.merikheti.com

मेरीखेती मैगजीन

अपने घर मंगवाने के लिए
अपनी जानकारी हमे दिए गए नंबर पर

+91 88006680275

(Whats App करे)

आपका नाम :

पूरा पता :

स्टेट :

पिन कोड :

फोन नंबर :

ईमेल :

कीमत सिर्फ ₹ 49/-

(Shipping Extra)

www.merikheti.com

खेती की जानकारी के लिए हमारे Whats App ग्रुप से जुड़े

NAYA
SWARAJ,
MERA
swaraj
VERSATILITY
POWER
STYLE
COMFORT
RELIABILITY
UNMATCHED

MERIKHETI

किसानो की बात
मेरी खेती के साथ

www.merikheti.com

Contact No : +91 8800777501
Address : 5A-46, 6th Floor, Cloud 9 Tower, Vaishali,
Sector -1, Ghaziabad - 201010